ओ३म्

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ३ अंक : ३५ १ नवम्बर २०१७ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

कार्यालय :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

जसवन्त कॉलेज के पास, मोहनपुरा, जोधपुर

महर्षि दयानन्द गौशाला मण्डोर का नवनिर्मित मुख्य द्वार

गौशाला का मुख्य द्वार निर्माण करवाने वाले भामाशाह परिवार

गोपाष्टमी के उपलक्ष्य पर व्याख्यान करते हुए डॉ. रामनारायण शास्त्री

गोपाष्टमी के उपलक्ष्य भजनोपदेश देते हुए

श्री दुर्गादासजी वैदिक एवं आ.प्र.सभा राज. के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी सपत्नीक

गोपाष्टमी के उपलक्ष्य पर उपस्थित गोभक्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ३ अंक : ३५

दयानन्दाब्द : -१९४

विक्रम संवत् : मार्गशीर्ष २०७४

कलि संवत् ५११८

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,११८

मार्गदर्शक

पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश,

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये (१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय...	४
२.	स्तुति व प्रार्थना..	८
३.	बाधक शत्रु मार्ग से दूर हो..	११
४.	आर्य समाज का इतिहास...	१२
५.	षष्ठ सम्मेलन...	१६
६.	सप्तम सम्मेलन...	१६
७.	मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन...	२२
८.	अष्ठम सम्मेलन...	२३
९.	आर्यवीरों ने जीते पदक...	२६
१०.	नवम सम्मेलन...	२७
११.	मगरा पूँजला वार्षिकोत्सव सम्पन्न...	२९
१२.	दशम सम्मेलन ..	३०
१३.	शारदीय नवसस्येष्टि ...	३४

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

लव जिहाद

लव जिहाद कल्पना नहीं है:

यह एक षड्यंत्र है जिसके तहत मुस्लिम लड़के और पुरुष गैरमुस्लिम लड़कियों के साथ प्यार का ढोंग करके साम, दाम, दण्ड, भेद से ऐसी स्थिति ला देते हैं कि वे लड़कियाँ उनकी कठपुतली बन जातीं हैं। फिर उनका धर्मपरिवर्तन करते हैं, निकाह करते हैं और वेश्यावृत्ति तक में ढकेल देते हैं। केरल के पूर्व मुख्यमंत्री ओमान चांडी द्वारा विधानसभा में प्रदत्त जानकारी, अक्टूबर २००६ में तत्कालीन कर्नाटक सरकार द्वारा लव जिहाद को एक गंभीर मुद्दा मानना और इसकी सीआईडी जाँच के आदेश, केरल हाइकोर्ट की टिप्पणियाँ, मुख्यमंत्री वीएस अच्यूतानंदन की इस विषय पर चिंता, पॉपूलर फ्रंट ऑफ इंडिया और कैंपस फ्रं. जैसे संगठनों का नाम आना, उत्तर प्रदेश सहित अब तो पूरे भारत में यह मुद्दा उठना इस कुत्सित योजना को सत्य प्रमाणित करने हेतु पर्याप्त है। फिर भी कुछ उदाहरण:

गुजरात के वलसाड़ शहर से एक विवाहित मुस्लिम ने खुद को हिन्दू बताकर शादीशुदा होने के बावजूद हिन्दू कन्या से शादी कर ली। शादी के बाद इमरान ने लड़की के माता–पिता से बिजनेस करने के नाम पर ७२ लाख रुपये लिए और फिर तीन साल तक गायब हो गया। पता चलने पर पीड़िता ने रिपोर्ट की।

अमर उजाला की गुरुग्राम से एक रिपोर्ट के अनुसार महिला थाना पुलिस ने हथीन से सटे एक गांव की नाबालिग नौंवी क्लास की छात्रा का अपहरण करके उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किए जाने के मामले में एक आरोपी शाहरुख को गिरफ्तार कर लिया। इस मामले को उजागर करने वाले तीन संगठनों श्री राम युवा संगठन, बजरंग दल व राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा ने गिरफ्तार किए गए युवक की जेब से प्राप्त पर्चियां व फेसबुक आइडी का स्क्रीनशॉट भी जारी कर कहा कि उक्त आरोपी ने राज शर्मा के नाम से फर्जी फेसबुक आइडी बनाई हुई थी व उसके जेब से एक कागज मिला है, जिसमें उसने अपने मोबाइल नंबर के साथ राहुल नाम लिखा हुआ है और इस राहुल नाम की लिखी हुई छोटी–छोटी पर्चियां बनाई हुई थी। इस लड़के के हाथ में कलावा व गले में हिंदू देवी की माला डाली हुई पाई गई। अर्थात् हिन्दू बनकर हिन्दू लड़कियों को फँसाना।

करीब तीन वर्ष पूर्व की घटना बता दूँ। फेसबुक से मेरे फोन नंबर लेकर किसी ने फोन कर धर्मान्तरण की प्रार्थना की। मिलने पर पता चला कि एक हिन्दू युवती को उसी के रिश्तेदार युवकों की मिलीभगत से एक मुस्लिम युवक फेसबुक के माध्यम से फँसाकर दिल्ली से करीब 40 किलोमीटर दूर एक मुस्लिम बस्ती में ले गया। घर काजी बुलाकर विवाह की औपचारिकता कराई। मांस, अण्डे आदि सब बनवाए और खिलाए, एक बेटे की माँ बनाया और तब तक घर से बाहर तक न निकाला, ताले और पहरे में ही रही। जब बेटा पॉच छः माह का दादी द्वारा रखने लायक हो गया तो इस भरोसे कि अब तो यह कहाँ जाएगी, घर वाले अपनाएंगे नही, भटककर वापस यहीं आएगी, उसे दिल्ली से जोधपुर की बस में बिठा दिया। धन्य है उसके माता–पिता जिन्होंने उस दुखियारी को छाती से लगाया। मैनें आदरणीय दुर्गादास जी से सम्पर्क किया। स्मृति भवन में उस पीड़िता से भविष्य के लिए वार्ता की और उसे आर्यसमाज जोधपुर रातानाडा के सानिंध्य में पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर प्रमाणपत्र जारी किया। पश्चात् उसने दुष्कर्मी के विरूद्ध केस भी किया। हजारों मामले अब तक लव जिहाद के सामने आ चुके हैं और उससे कई गुना अधिक सामने नहीं आ पाए हैं। अतः जो भी लव जिहाद को कल्पना कहता है,

वह या तो शुतुरमुर्ग है या छली है। विशेष बात यह है कि मुस्लिम युवक और पुरूष ही इस काम में लगे हैं, मुस्लिम युवतियाँ व नारियाँ नहीं। कारण स्पष्ट है। कबीलाई वहशी संस्कृति की उपज नारी को मानवेतर और भोग्या मानते हैं। इसलिए अपनी नारियों पर विश्वास नहीं करते और पराई नारियों को फँसाने में अपनी विजय मानते हैं।

लव जिहाद के तरीके:

1. धर्मभीरू महिलाओं और कन्याओं को फँसाने के लिए कलाई व गले में धागा और देवता, तिलक, मंदिरों के बाहर गाय कुत्तों को घास, रोटी दे प्रणाम कर, कन्याओं और महिलाओं का ध्यान आकर्षित कर किसी भी बहाने से संपर्क कर घनिष्ठता बढ़ाना।

2. हिन्दू लड़की के आधुनिक होने का पता चलते ही धनी छैला बन पीछे लगना। मनोरंजन और संचार के आधुनिक उपकरण, सौंदर्यप्रसाधन आदि के उपहार देते हुए मित्रता स्थापित कर पार्टी, मूवी, मॉल, डांस, बार, रेव, ड्रग आदि एक से बढ़कर एक नरक।

3. मोहल्ले में या आस पड़ौस में रहने वाली हिन्दू महिलाओं और युवतियों के चरित्र पर खुद प्रकाश में न आते हुए, हिन्दुओं के माध्यम से ही झूठा लांछन लगाकर बदनाम करते हैं और स्वयं सहानुभूतिपूर्वक बात कर घनिष्ठता बढ़ाते हैं।

4. ग्रामीण से शहरी परिवेश में आए परिवारों की युवतियों को उनकी शहरी महत्वाकांक्षा का फायदा उठाकर उसे भड़काते और उपहार व नशे तक से बहका लेते हैं।

5. मोबाइल फोन और इण्टरनेट पर सामाजिक वैबसाइटें लव जिहादियों लिए सबसे उपयोगी उपकरण के रूप में उभरे है. किशोरियों और युवतियों में सुनियोजित रोचक किन्तु गोपनीय संदेशों और वार्तालाप से रूचि जगाकर आपत्तिजनक बातों और संदेशों का आदानप्रदान करते हैं। हिन्दू कन्याओं की ओर से गए आपत्तिजनक संदेशों को साधन बना न सिर्फ कन्याओं, वरन् परिजनों को भी ब्लैकमेल करते हैं। इन्हीं माध्यमों से हिन्दू महिलाओं की रुचि अनुसार अन्य झूठे एकाउण्ट बनाकर भी मेलजोल बढ़ाते हैं।

6. दार्शनिक प्रकृति की हिन्दू कन्याओं को हिन्दुत्व की कमियों जैसे अवैज्ञानिकता, अनेकता, देवताओं का अज्ञान, अश्लीलता, कपट, भोग आदि और इस्लाम रूपी बिगड़ैल हाथी के दिखावटी दाँत यथा रोजे, जकात, नमाज, एकता आदि ढोंग की बढ़ाई कर उसे डिगाना और फँसाना। एक सत्य घटनाः अयोध्या में जोधपुर के दो शहीदों में से एक श्री महेन्द्रनाथ अरोड़ा महर्षि दयानन्द स्मृति भवन आए। कहा एक अजीब मामला है। मुस्लिम युवक हिन्दू बनने को तैयार है किन्तु उसकी प्रेमिका हिन्दू युवती कहती है कि हिन्दुत्व में क्या है? किसी के पास उसके सवालों का जवाब नहीं है। आर्य वीर दल के दो अधिकारी गए। दो तीन बैठकों में उसे निरूत्तर किया और लड़के का शुद्धिकरण किया।

7. गरीब हिन्दू युवतियों को काम, धन्धे, नौकरी, आर्थिक मदद के बहाने फँसाते हैं। हिन्दू होने को दुःख का कारण बताते हैं। इस्लाम में बरकत और शान्ति बताते हैं।

8. ठेकेदार लोग मजदूरी करने वाली हिन्दू औरतों का मजदूरी के लिए यौनउत्पीड़न करते हैं, भेद खोलने का डर दिखाकर उन्हें अन्य हिन्दू महिलाओं को फँसाने हेतु दलाली भी करवाते हैं।

9. मजारों, पीरों, कब्रों, मुस्लिम तांत्रिकों, मीरादातार आदि स्थानों पर जाने वाली अंधविश्वासी हिन्दू मूर्खाओं के यौनशोषण के कुछ मामले यदा कदा समाचारों में आते रहते हैं। किन्तु अधिकांश मामले इन अंधविश्वासी मूढ़ औरतों के भय से दबे रहते हैं।

10. तबलीग के माध्यम से न सिर्फ मुसलमानों में कट्टरता और जिहाद फैलाया जाता है, वरन्

हिन्दू समाज की मुख्यधारा से कटे पूरे के पूरे समाजों से सम्पर्क कर उन्हें येन केन प्रकारेण इस्लाम की दावत और दीक्षा दी जाती है। जैसे मीनाक्षीपुरम् काण्ड।

लव जिहाद क्यों?

यह निर्विवाद सत्य है कि कुरान सहित इस्लामी वाङ्मय मुसलमानों को गैर मुस्लिमों से दूर रहने, घृणा करने और लड़कर उन्हें मार डालने के लिए, नष्ट करने के लिए या जबरन भी मुस्लिम बनाने के लिए उकसाता है। इस्लाम में औरतें खेतियाँ हैं और बहुपत्नीप्रथा जायज। सीधी समझने वाली बात है कि अब एक योजना के तहत हिन्दूओं की सामाजिक और धार्मिक कमजोरियों का फायदा उठाते हुए हिन्दू नारियों को भी खेतियाँ बनाया जा रहा है। उद्देश्य गैरमुस्लिमों को प्रताड़ित, बेइज्जत व नष्ट करके इस्लामीकरण करना।

लव जिहाद से बचाव:

एक वाक्य में हल बताऊँ तो गतांक के संपादकीय का शीर्षक दोहरा देता हूँ– "आसुरी भावों की अमोघ औषधः देव दयानन्द।" बार बार दोहराता रहता हूँ कि सिर्फ मूर्ख और स्वार्थी ही आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द से दूर रह सकता है। मैं सब आर्यसमाजियों से भी अनुरोध करूंगा कि समाज की इकाई परिवार है। अतः अपने परिवार को भी सत्संग, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, सेवा और साधना के सम्पर्क में लाईए। इनकी कीमत तो संतान के संस्कार बिगड़ जाने पर बुढ़ापे में अनुभव होती है, किन्तु तब तक दो पीढ़ी बिगड़ चुकी होती है। यदि आर्यसमाज को अच्छा समझ कर आप आर्यसमाज में आते हैं तो अपने परिजनों को क्यों वंचित रखते हैं? आर्यसमाज को अच्छा नहीं समझते हैं, तो आते क्यों हैं? आर्यसमाज और दयानन्द को समझ लेने वाली संतान लव जिहाद से बची रहेगी।

अब कुछ फुटकर उपायः

1. मेरे कुछ सज्जन मुस्लिम मित्रों द्वारा मेरी पोस्टों पर आपत्ति किए जाने पर और इस्लाम का उज्ज्वल पक्ष बताए जाने पर मैं लिखता भी हूँ कि सज्जन से सज्जन मुस्लिम भी इस बात की गारण्टी नहीं दे सकता कि उसके घर में जिहादी पैदा नहीं होगा। सज्जन मुस्लिम तो इस्लाम का सहउत्पाद है। मुख्य उत्पाद तो सारे विश्व को सिर पर उठाए ही हैं। महर्षि दयानन्द और बाबू देवकीनन्दन खत्री मानते हैं कि कुरान और इस्लामी वाङ्मय को मानने वाले मुसलमान विश्वसनीय नहीं हो सकते। इस बात को सभी हिन्दू जानें, मानें व अपनाएँ।
2. अपने संतान को शस्त्र और शास्त्र, दोनों में निष्णात करें।
3. अपनी संतान के मोबाइल पर सैकड़ों रूपये व्यय करने वाले परिवार उनके लिए गौरवमयी भारतीय आर्ष साहित्य और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की जीवनियाँ पढ़ने के लिए रखे और व्यक्तिगत व सामूहिक स्वाध्याय सुनिश्चित करें। सामूहिक चर्चा स्वाध्याय को निश्चित करती है और विषय के भ्रम भी दूर करती है।
4. अपने घर में आर्य विद्वानों को बार बार बुलाएँ।
5. यदि अपने को विश्वगुरु के वंशज मानते हो तो सिर्फ सत्य और निभ्रान्त ज्ञान को ही स्वीकार करो। जिसमें भी भ्रम, आक्षेप और कमी लगे, उसे त्याग दो। झूठ को त्याग देना ही उत्तर होता है। शंका का समाधान निकटतम आर्यसमाज में करें।
6. दूसरों की कमियों से अपनी कमी को सही मत ठहराओ। अन्यथा बकरीद के सामने तुम बलिप्रथा व मांसाहार जैसे पाप नहीं त्यागोगे। बहुविवाह के सामने ब्रह्मचर्य नहीं अपनाओगे। कट्टरता के सामने अपने पाखण्ड, जड़ता, जातिवाद और अन्धविश्वासों को नहीं त्यागोगे तो

तुम्हारी भ्रमित संतान अपनी और धर्म की रक्षा कैसे करेगी?

7. जिस क्षमता से एक कबूतर दूसरे कबूतर से लड़ता है, उसी क्षमता से वह बिल्ली पर हमला करे तो बिल्ली रक्षा पर उतर आएगी। क्रोध शत्रु है, किन्तु समन्यु तो सबको होना ही चाहिए, अन्यथा पुरुषार्थ और पराक्रम कुण्ठित हो पराजय ही देंगे।
8. यह भ्रम दूर कर दो कि प्रतिपक्षियों में एकता है। जब शेर अकेला भी सामने हो तो कोई भी निश्चिंत होकर हमला नहीं कर सकता। उसके तो पिंजरे से भी लोग दूर रहते हैं। अपनी एकता के निम्नांकित उपाय भी सुनिश्चित करो।
9. एक धर्मग्रन्थ वेद, एक उपास्य निराकार व सर्वशक्तिमान् परमात्मा, एक ओ३म् ध्वजा, एक उपासना पद्धति संध्या, गुण कर्म स्वाभावानुसार परस्पर प्रेम पसारता वर्णाश्रम व्यवहार, एक लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आदि एक्य के कारकों को अपनाना ही होगा। मानवजनित मतों को त्याग ईश्वरीय आज्ञा वेदों को मानने की हिम्मत पैदा करो। जो तुम्हें वेदों से विमुख करता है, जो तुम्हें वेदज्ञान के अयोग्य घोषित कर वेदों की ओर कदम बढ़ाने से रोकता है, जो धर्म को विज्ञानसम्मत नहीं मानता, जिसके पास तुम्हारी ही नहीं विधर्मियों की भी शंकाओं का समाधान नहीं है– वह पाखण्डी है, देश और धर्म की ही नहीं तुम्हारी अवनति का भी कारण है।
10. स्व. डॉ. धर्मवीर जी के शब्दों में हिन्दू स्वभाव बन चुका हैः तुझे क्या, मुझे क्या? पड़ौसी के घर में आग लगी है–मुझे क्या? तेरे घर में आग लगने वाली है– तुझे क्या? जब काश्मीरी पण्डित की पीड़ा कन्याकुमारी का मछुआरा समझेगा, जब गोधरा की पीड़ा आसाम का हिन्दू समझेगा, तब एकता कही जाएगी। "वसुधैव कुटुम्बकम" उच्चारने वाले इतना तो सुनिश्चित करें।
11. "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" उच्चारने वाले गम्भीरता से विचार करें कि आपकी नारियों से राक्षस निर्भयता से रमण करने की योजना क्रियान्वित कर रहे हैं, तो नारियों की पूजा का अभाव है। नारियों को बन्दी भी नहीं और स्वच्छन्द भी नहीं, गरिमामय और पूजनीय बनाइए, वह कहीं भी, किसी भी जाल में नहीं फँसेगी।
12. सिर्फ घर की बेटियों पर नजर रखना समस्या का हल नहीं है। संस्कार व गरिमा आप बेटियों में पैदा न कर पाए तो वह आपकी आँख बचाकर ब्लू व्हेल की तरह लव जिहाद का शिकार बनेगी और आप सिर्फ लकीर पीटोगे। संस्कार व गरिमा पैदा कर दी तो आपको नजर रखने की जरूरत नहीं रहेगी।
13. कहना बहुत आसान है कि एक अनजान से प्रेम के लिए माँ, बाप व परिजनों का प्रेम ठुकरा कर संतान चली गई। बड़ा कर देना प्रेम देना नहीं है। आप प्रेम करते तो वह आपसे छुपकर किसी दूसरे से प्रेम नहीं करती। उसने अपने नये प्रेमी से अवश्य कहा होगा कि आप लोग उसका प्रेम नहीं मानेंगे। आपको संतान ने इतना समझ लिया, आप संतान को क्यों नहीं इतना अपना बना पाते कि वह आपसे निर्भयता से अपने संबंध के बारे मे बताए और फिर भी आपकी इच्छा के बिना नया संबंध न स्वीकारे। जिस परिवार में ऐसी संतान है, वह धन्य है। वैसे असंवाद की स्थिति के कारण जातिवाद, ऊँचनीच, छुआछूत और जड़ता है जो जितने जल्दी नष्ट होंगे, उतना ही जल्दी इस कौम का कल्याण होगा।

– कमल किशोर आर्य

स्तुतिविषय:

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजु: प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये
चक्षु: श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोज: सहौजो मयि प्राणापानौ।।५।।

—यजु. ३६।१०।।

व्याख्यान— हे करुणासागर परमात्मन्! आपकी कृपा से मैं "ऋचं वाचं प्रपद्ये" ऋग्वेदादिज्ञानयुक्त (श्रवणयुक्त) होके उसका वक्तास होऊँ तथा "मन: यजु:, प्रपद्ये" यजुर्वेदादिप्रायार्थसहित सत्यार्थमननयुक्त मन को प्राप्त होउँ। ऐसे ही "साम प्राणं प्रपद्ये" सामवेदार्थनिश्चय निदिध्यासनसहित प्राण को सदैव प्राप्त होऊँ। "चक्षुश्रोत्रं प्रपद्ये" मैं वेदानुकूल श्रवणशक्ति से अथर्ववेद का चिन्तन-मनन सदा करूँ। "वागोज:" वाग्बल, वक्तृत्वबल, मनो-विज्ञानबल मुझको आप देवें। अन्तर्यामी आपकी कृपा से मैं इस सबको यथावत प्राप्त होऊँ। "सहौज:" शरीरबल, नैरोग्य, दृढ़त्वादि गुणों को मैं आपके अनुग्रह से सदैव प्राप्त होऊँ "मयि, प्राणापानौ" हे सर्वजगज्जीवनाधार! प्राण (जिससे कि ऊर्ध्व चेष्टा होती है) और अपान (अर्थात् जिससे नीचे की चेष्टा होती है)— ये दोनों मेरे शरीर में सब इन्द्रिय, सब धातुओं की शुद्धि करने वाले तथानैरोग्य, बल, पुष्टि, सरलगति करनेवाले, स्थिर आयुवर्धक और मर्मस्थलों की रक्षा करने वाले हों, उनके अनुकूल प्राणादि को प्राप्त होके आपकी कृपा से हे ईश्वर! सदैव सुखी होके आपकी आज्ञा और उपासना में तत्पर रहूँ।।५।।

—आर्याभिविनय से

दुष्टो को दूर करो

ते अस्मभ्यं शम यंसन्नमृता मर्त्येभ्य:। बाधमाना अप द्विष:।। (ऋग्.) —१।९०।३

पदार्थ:— जो **(द्विष:)** दुष्टों को **(अप, बाधमान:)** दुर्गति के साथ निवारण करते हुए **(अमृता:)** जीवन्मुक्त विद्वान् हैं **(ते)** वे **(मर्त्येभ्य:, अस्मभ्यम्)** अस्मदादि मनुष्यों के लिए **(शर्म)** सुख **(यंसन्)** देवें।

भावार्थ:— मनुष्य को चाहिए कि विद्वानों से शिक्षा पाकर खोटे स्वभाववालों को दूर कर नित्य आनन्दित हों।

पति-पत्नी व्यवहार

मा भेर्मा संविक्थाऽऊर्जं धत्स्व धिषणे

वीड्वी सती वीडयेथामूर्जं दधाथाम्। पाप्मा हतो न सोमः।। –(यजु.) ६।३५

पदार्थः– हे स्त्री! तू **(विड्वी)** शरीर-आत्मबलयुक्त होती हुई पति से **(मा भेः)** मत डर, **(मा संविक्थाः)** मत कंप और **(ऊर्जम्)** देह और आत्मा के बल और पराक्रम को **(धत्स्व)** धारण कर। हे पुरुष! तू भी वैसे ही अपनी स्त्री से वर्त्त। तुम दोनों स्त्री-पुरुष **(धिषणे)** सूर्य और भूमि के समान परोपकार और पराक्रम को धारण करो, जिससे **(वीडयेथाम्)** दृढ़ बलवाले होओ; ऐसा वर्त्ताव वर्त्तते हुए तुम दोनों को **(पाप्मा)** अपराध **(हतः)** नष्ट हो और **(सोमः)** चन्द्र के तुल्य आनन्द, शान्त्यादि गुण बढ़ाकर एक-दूसरे का आनन्द बढ़ाते रहो।

भावार्थः– इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलङ्कार है। स्त्री-पुरुष ऐसे व्यवहार में वर्त्तें कि जिससे उनका परस्पर भय और उद्वेग नष्ट होकर आत्मा की दृढ़ता, उत्साह और गृहस्थाश्रम की सिद्धि से ऐश्वर्य बढ़े और वे दोष तथा दुःख को छोड़ चन्द्रमा के तुल्य आह्लादित हों।

प्रातःकाल प्रभु-उपासना

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं

घृतेन। नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि।।७०।। (सामवेद)

पदार्थः– **(यस्य)** जिस परमात्मा का **(प्रतीकम्)** स्वरूप **(घृतेन)** प्रकाश से **(आहुतम्)** सब ओर से व्याप्त है और जिसकी **(सबाधः)** योगयज्ञ के ऋत्विज् **(नरः)** लोग **(हव्येभिः)** भक्तिरूप हव्यों के साथ **(ईडते)** स्तुति करते हैं और जो **(नमोभिः)** नमस्कार वा प्रमाणों से **(सम्, इन्धे)** हृदय में भली प्रकार प्रकाश करता है, वह **(राजा)** तेजोमय **(अर्य्यः)** चराचर का स्वामी **(अग्निः)** परमात्मा **(उषसाम्, अग्रम्)** उषाकाल में, **(आ, अशोचि)** उपासकों के हृदय में सर्वतः पवित्रता करे।

भावार्थः– मनुष्यों को उचित है कि प्रातःकाल उठकर परम प्रकाश, उपासकों से ध्याये हुए, सर्वाध्यक्ष, सर्वपूज्य परमात्मा का ध्यान करें, जिससे वह अन्तःकरण को पवित्र करे और अविद्या की निवृत्ति द्वारा सर्वदुःख दूर हों।

गिरे हुओं को उठाना

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।

उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।। –४।१३।१ अथर्ववेद

पदार्थः– **(देवाः)** हे व्यवहार-कुशल **(देवाः)** विद्वान् लोगो! **(अवहितम्)** अधोगत पुरुष को **(उत)** अवश्य **(पुनः)** फिर **(उन्नयथ)** तुम उठाते हो **(उत)** और भी **(देवाः)** हे दीनशील **(देवाः)** महात्माओ! **(आगः)** अपराध **(चक्रुषम्)** करने वाले प्राणी को **(पुनः)** फिर **(जीवयथ)** तुम जिलाते हो।

भावार्थः– महात्मा लोग स्वभाव से ही अधोगत पुरुषों को ऊँचा करते और मृतक-समान अपराधियों को पाप से छुड़ाकर उनका जीवन सफल कराते हैं। मनुष्य सत्पुरुषों के सत्संग से अपने आत्मिक और शारीरिक दोषों को त्यागकर जीवन सुधारें।

गोपाष्टमी पर्व हर्षोल्लास से मनाया

महर्षि दयानंद गौशाला मंडोर में गोपाष्टमी पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। गौशाला के प्रबंधक श्री दुर्गादास जी "वैदिक" ने बताया कि इस अवसर पर गौशाला के नवनिर्मित द्वार का लोकार्पण द्वार बनवाने वाले भामाशाह परिवार ने किया। लोकार्पण एवं यज्ञ श्री विमल शास्त्री के पौरोहित्य में करवाया गया। आर्य समाज के प्रबुद्ध भजनोपदेशकों श्री अमर सिंह जी एवं श्री केशवदेव जी ने इस अवसर पर बहुत ही सुंदर भजन प्रस्तुत कर और संस्मरण सुनाकर गौ सेवा के लिए लोगों को प्रेरित किया। डॉक्टर रामनारांयण जी शास्त्री ने इस अवसर पर अपने व्याख्यान में गौ और गौसेवा का महत्व प्रतिपादित कर श्रोताओं को अभिभूत किया। गौशाला में कार्यरत गोपालों को प्रोत्साहन हेतु भेंट दी गयी। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने गोशाला में गौओं को दुलारा और यथाशक्ति गौशाला को सहयोग प्रदान किया।

नोटः कृपया चित्र कवर पृष्ठ 2 पर देखें

बाधक शत्रु मार्ग से दूर हों

अप त्यं परिपन्थिनं, मुषीवाणं हुरश्चितम्। दूरमधि स्त्रुतेरज।। ऋग् १.४२.३

ऋषि: कण्व: घौर:। देवता पूषा। छन्द: गायत्री।

• **[हे पूषन्! हे परमात्मन्!]** **(त्यं)** उस **(परिपन्थिनं)** मार्ग के बाधक शत्रु को **(मुषीवाणं)** चोर को [और] **(हुरश्चितम्)** कुटिलता का संग्रह करने वाले को **(स्रुते:अधि)** मार्ग से **(दूरं)** दूर **(अज)** फेंक दो।

• धर्म पर चलने की वेदादि शास्त्र बार-बार प्रेरणा करते हैं। परन्तु वह धर्ममार्ग आसान नहीं है, प्रत्युत बहुत ही कंटकाकीर्ण हैं। अनेक छद्मवेषी शत्रु मार्ग में बाधक बनकर आ खड़े होते है, जिनसे लोहा लेना बड़ा ही कठिन हो जाता है। जब कोई धर्मपथ पर चलने का व्रत लेता है और अपनी यात्रा आरम्भ करता है, तब अधार्मिक लोगों में खलबली मच जाती है। वे सोचने लगते हैं कि धार्मिकों की संख्या शनै:-शनै: बढ़ती गई तो एक दिन ऐसा आयेगा कि अधर्म को कन्दरा में जाकर मुख छिपाना पड़ेगा और हम लोगों को कहीं पैर टिकाने तक का आश्रय नहीं मिल सकेगा। अत: वे धर्म मार्ग में विघ्न डालने का षड्यन्त्र रचाते हैं और धर्ममार्ग के पथिकों को मोह में डालने के लिए अधर्म को ही धर्म के रूप में उपस्थित करने लगते हैं। वे कहते है कि कर्म-फल देने वाला परमात्मा और कर्म-फल भोगनेवाला जीवात्मा कपोल-कल्पित वस्तुएँ हैं, अत: इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है; जिसे करने में स्वयं को सुख मिलता है, वही धर्म है; अत: खाओ, पिओ, नाच-रंग की रंगरेलियों में मस्त रहो, यही सच्चा जीवन-दर्शन है, और यही धर्म है। परन्तु वस्तुत: धर्म का यह रूप उपस्थित करने वाले लोग धर्म-मार्ग के **'परिपन्थी'** या शत्रु हैं।

धर्मपथ का पथिक जिस सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि के पाथेय को साथ लेकर चलता है, उसे बीच में चुरा लेने वाले **'मुषीवा'** लोग भी बहुत-से मिलते है। वे हिंसा से अहिंसा, असत्य को सत्य से, स्तेय को अस्तेय से, अब्रह्मचर्य को ब्रह्मचर्य से बड़ा बताकर और लुभावने रूप में उपस्थित करके अहिंसा आदि की सम्पत्ति को उससे ठग लेते हैं और **'हुरश्चित्'** बनकर उसके मन को कुटिलताओं का आवास-भवन बना देते हैं। इन **'परिपन्थी'**, **'मुषीवा'** और **'हुरश्चित्'** व्यक्तियों से हम धर्म-यात्रियों को सावधान रहना होगा, अन्यथा हमारी यात्रा विघ्नित और विच्छिन्न हो जाएगी।

धर्म-यात्रा में हमें केवल इन बाह्य शत्रुओं का ही भय नहीं है, अपितु हमारे अन्दर भी शत्रु घर किये बैठे हैं। हमारे अन्दर प्रच्छन्न रूप से बैठे हुए अपने ही धर्म-विरोधी भाव धार्मिक भावों को दबा देना या चुरा लेना चाहते हैं और उनके स्थान पर हमारे अन्त:करण को कुटिलताओं का संग्रहालय बना देने का षड्यन्त्र करते हैं। उन विरोधी भावों से भी हमें सचेत रहना होगा।

हे पूषन्! हे हमारे आत्मा को पोषण देनेवाले परमात्मन्! तुम हमारे धर्म-मार्ग में बाधा डालने वाले बाह्य और आन्तरिक समग्र शत्रुओं को दूर फेंक दो तथा हमें निरन्तर अपनी धर्म-यात्रा प्रवृत्त रखने के लिए परिपुष्टि प्रदान करते रहो।

—वेदमञ्जरी से

आर्यसमाज का इतिहास

थ्यासोफी से सम्बन्ध

(गतांक में पढा:- थ्यासोफी के संस्थापक विदेश में अपमानित हो महर्षि के शिष्य भाव से भारत में आकर अकिंचन अवस्था में आर्यसमाज से जुड़े। अब इससे आगे....)

पहले पहल यह युगल स्वामी जी को सहारनपुर में मिला। इसके बाद कई स्थानों पर स्वामी जी के साथ यह युगल घूमता रहा। स्वामी जी के शिष्य इन अपने को आर्यसमाजी कहने वाले थ्यासोफिस्टों के व्याख्यान करवाने लगे, और उनका आदर सत्कार करने लगे। लगभग एक साल तक यही प्रेम सम्बन्ध स्थापित रहा और थ्यासोफिस्टों की भक्ति उमड़ती रही। इतना समय भारत में पांव जमाने और बहुत से शिष्य इकट्ठे करने के लिए पर्याप्त था। अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतवासी युगल की बातों को सुनने और पसन्द करने लगे। लगभग साल तक प्रेम सम्बन्ध जारी रहा और इसके पीछे नए रंग दिखाई देने लगे।

झगड़े के मुख्य कारण तीन हुए। भारतवर्ष में आकर थ्यासोफिस्ट युगल को ज्ञात हुआ कि जिस व्यक्ति को वह गुरु बनाकर आयें है, वह गुरू बनकर ही रहेगा, शिष्य नहीं बन सकता। युगल समझता था कि वह पं. दयानन्द जी को अपनी वृद्धि का साधन बना सकेगा, परन्तु उसे शीघ्र ही ज्ञात हुआ कि वह भारतीय पण्डित ऐसा भोला नहीं कि किसी का हथियार बन सके।

दूसरी ओर युगल ने देखा कि भारतवर्ष में ज्ञान और श्रद्धा की मात्रा बहुत अधिक है। कोई भी आदमी आकर गुरु बनना चाहे तो बिल्कुल निराश नहीं होगा, कुछ-न-कुछ शिष्य उसे मिल ही जाएंगे। ऐसी दशा में थ्यासोफी के संस्थापकों ने यही उत्तम समझा कि अपनी दुकान जुदा ही खड़ी की जाय। आने से पूर्व वह आर्यसमाजी थे, आकर शीघ्र ही उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके सिद्धान्त आर्यसमाज की अपेक्षा बौद्धों के साथ अधिक मिलते हैं।

तीसरी शिकायत इन्हीं दो शिकायतों की परिणामस्वरूप थी। थ्यासोफी आर्यसमाज की शाखा थी। जो लोग थ्यासोफी के सभ्य थे, वह वस्तुत: आर्यसमाज के ही सभ्य समझे जा सकते थे। ऐसी दशा में यह सोचना ही असंगत था कि आर्यसमाज के सभासद् थ्यासोफी के सभासद् बनाये जाएँ। जो मूल संस्था का सभ्य है, उसे शाखा का सभ्य बनने की क्या आवश्यकता है? परन्तु कर्नल अल्काट तथा मैडम ब्लैवेट्स्की ने आर्यसमाज के सभासदों को अपने सभासद् बनाना प्रारम्भ किया। इसी व्यवहार को स्वामी जी ने अनुचित समझा।

तह में ये तीन कारण थे। वह थ्यासोफी के लीडर, जिन्हें अपने सिद्धान्त आर्यसमाज के ऐन अनुकूल दिखाई देते थे; शीघ्र ही संसार के कर्ता ईश्वर से इनकार कर बौद्धों में नाम लिखाने लगे। अमरीका में मैडम ब्लैवेट्स्की के अन्दर केवल किंग जार्ज की आत्मा प्रवेश करती थी, परन्तु भारत में आते ही

हिमालय निवासी महात्मा और उनके प्रतिनिधि महात्मा कूटहूमी से मैडम का परिचय हो गया और हिमालय से सीधे सन्देश पहुँचने लगे।

सबसे बड़ा कारण, जिससे मतभेद पैदा हो गया, यह था कि थ्यासोफी के संस्थापक चमत्कारों को अपने धर्म का आवश्यक सिद्धान्त मानने और उद्घोषित करने लगे। चमत्कारों को वह योगसिद्धि के नाम से पुकारते थे, परन्तु योग के बिना ही योग-सिद्धि का दावा करते थे। सिद्धियां भी विचित्र थीं। किसी की गुम हुई वस्तु का पता दे दिया, किसी के दिल की बात बूझने की अटकल लगा दी। ऐसे चमत्कार थे, जिन्हें दिखाकर थ्यासोफी लोगों के हृदयों में योग के प्रति श्रद्धा का संचार करना चाहती थी। थ्यासोफी के उस समय के चमत्कारों के दो दृष्टान्त नीचे दिए जाते हैं, उन पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाएगा कि आर्यसमाज के संस्थापक के विचार थ्यासोफी के विचारों से क्यों नहीं मिल सकते थे?

मैडम ब्लैवेट्स्की शिमला में थीं। प्रसिद्ध मि.ए.ओ.ह्यूम के घर पर कुछ लोगों को निमन्त्रण था। निमन्त्रण में मैडम ब्लैवेट्स्की भी शामिल थी। भोजन के पीछे यह बात उठी कि मैडम अपना कोई आध्यात्मिक चमत्कार दिखाएँ। मैडम तैयार हो गईं। घरवालों से उन्होंने पूछा कि क्या आप लोगों की कोई वस्तु खोई हुई हैं? उत्तर से पता चला कि कुछ रोज हुए, मि. ह्यूम के घर से एक आभूषण गुम हुआ था, मैडम ने कुछ देर तक ध्यान कर के बाग का वह स्थान बता दिया, जहाँ गुम हुई वस्तु गड़ी थी। वस्तु मिल गई और चमत्कार की धूम दिग्दिगन्त में फैल गई।

कुछ दिन पीछे इंग्लिशमैन, बांबे गजट, टाइम्स ऑफ इंडिया, और सिविल मिलिटरी गजट में चिट्ठियाँ प्रकाशित हुईं, जिनसे रहस्य का उद्भेद हो गया। एक अंग्रेज नौजवान शिमला से बंबई गया और वहाँ मैडम से मिला, शिमला में मि. ह्यूम के यहां बहुत आया-जाया करता था। बम्बई के मि.हौर्मस्जी सीरवाई ने गवाही दी कि जैसा गहना चमत्कार से मिला है, ठीक वैसे ही गहने की मैडम ब्लैवेट्स्की ने उससे मरम्मत करवाई थी। रहस्य को खोलकर ऐतिहासिक घटना बता देना कुछ कठिन नहीं है। वह गहना मि.ह्यूम के घर से उड़वाया गया। बंबई में उसकी मरम्मत करवाकर मैडम अपने साथ शिमला ले गईं। और चमत्कार दिखाकर थ्यासोफी की सत्यता सिद्ध कर दी।

दूसरी घटना लाहौर में हुई। 1883 के अप्रैल मास में थ्यासोफी के महात्माओं का एक चेला लाहौर में पहुँचा। मैडम ब्लैवेट्स्की के एक शिष्य ने बड़े जोर से उसका ढोल बजाया और यह घोषणा कर कदी कि वह चेला चमत्कार दिखाएगा। वह अपनी उंगली आगे करेगा, पहले तो उंगली को कोई काट ही नहीं सकेगा, यदि काट भी सके तो वह झटपट जुड़ जाएगी। भरी सभा में चमत्कार की घोषणा हो गई। पहले तो किसी हिन्दू का हृदय ऐसे कठिन कार्य के लिए तैयार न हुआ, परन्तु जब बहुत देर होगई तो लोगों के दयाभाव का अभिप्राय यह निकाला जाने लगा कि चेले की शक्ति से किसी का हाथ नहीं उठता। तब एक सिख ने हिम्मत करके उंगली काट दी। बेचारा चेला चक्कर में आ गया। उंगली का जुड़ना तो क्या, बेचारा कई दिन

तक दु:ख भोगता रहा और महात्माओं के नाम का जाप करता रहा।

ऐसी घटनाओं को सुनकर आर्यसमाज का संस्थापक ऋषि कैसे चुप रह सकता था। वह दम्भ और धोखे का खत्रु था, वह धर्म मे सुलह–नामा करने का विश्वास नहीं रखता था। इधर स्वामी जी को थ्यासोफी के सस्थापकों के असत्य व्यवहार पर घृणा होने लगी, उधर मूर्ख जनता को जाल में फंसाने का खुला अवसर देकर युगल भी स्वामी जी की शिष्यता से इन्कार करने का उपाय सोचने लगा।

कुछ दिनों तक पत्र–व्यवहार जारी रहा। मैडम ब्लैवेटस्की और कर्नल अल्काट का यत्न यह रहा कि किसी प्रकार आर्यसमाज के संस्थापकों को थ्यासोफी के चंगुल में फँसाया जाए। एक ओर थ्यासोफी की ओर से कर्ता ईश्वर से इन्कार, दूसरी ओर चमत्कारों का दम्भ ऋषि ने आवश्यक समझा कि आर्यपुरुषों को सचेत कर दिया जाए।

असौज बदी 14 संवत् 1937 को मेरठ के आर्यसमाज का दूसरा वार्षिकोत्सव था। इस उत्सव के अवसर पर श्री स्वामी के दो व्याख्यान हुए। इन व्याख्यानों में आपने उन कारणों पर प्रकाश डाला, जिनसे आर्यसमाजी थ्यासोफी से जुदा होने पर बाधित हुआ, और यह भी घोषणा की कि किसी आर्यसमाजी को थ्यासोफी का सभ्य न बनना चाहिए। दोनों में कई मौलिक भेद उत्पन्न हो गए थे। (1) थ्यासोफिस्ट सृष्टिकर्ता ईश्वर को नहीं मानते थे, (2) वे अपने को बौद्ध कहते थे, (3) वे हिमालयवर्ती किन्ही कल्पित महात्माओं के, और उनके गुप्त सन्देशों पर विश्वास रखते थे। (4) वे सिद्धियों के नाम पर चमत्कारों को मानते और उनका दावा भी करते थे। (5) थ्यासोफी में ईसाई–मुसलमान, बौद्ध–हिन्दू सब अपने एक–दूसरे के विरुद्ध सिद्धान्तों को मानते हुए भी प्रविष्ट हो सकते थे। इस प्रकार थ्यासोफी आर्यसमाज से कोसों दूर चली गई थी। ऋषि दयानन्द की ओर से यह घोषणा आवश्यक हो गई थी, अन्यथा आर्यसमाज के नाश का भारी भय था। थ्योसोफी में कई ईसाई भी शामिल हो गये थे। उनमें से अनेक राजकर्मचारी थे। थ्यासोफी के संचालक चाहते थे कि राजकर्मचारियों की सहानुभूति का प्रलोभन देकर ही आर्यसमाज को फुसलाया जाए। परन्तु यह हथियार भी निकम्मा साबित हुआ।

मेरठ में ऋषि दयानन्द द्वारा की हुई घोषणा से कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवेट्स्की के कल्पित कार्यक्रम को भारी धक्का लगा। वह दिल में सोचे बैठे थे कि अब शीघ्र ही सारे आर्यसमाजी हमारे काबू में आ जाएंगे और थ्यासोफी, जो प्रारम्भ में आर्यसमाज की शाखा बनी थी, उसे खा जाएगी। ऋषि दयानन्द के व्याख्यान ने इस मीठे मंसूबे को तोड़ दिया। उस समय मैडम ब्लैवेट्स्की शिमला में थीं। वहां उन्होंने स्वामी जी की घोषणा का समाचार सुना। वह बहुत छटपटाईं और मेरठ के बाबू छेदालाल जी के नाम उन्होंने एक चिट्ठी भेजी। चिट्ठी बहुत लम्बी है, इस कारण उसके कुछ आवश्यक उद्धरण ही यहां दिए जाते हैं। चिट्ठी अंग्रेजी में थी, यहां उसका अनुवाद दिया गया है:–

"…..मेरठ आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव अभी मनाया गया है। उसमें अन्याय आर्यसमाजों के

सभासद् सम्मिलित थे। ऐसे समय में स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में सबके सामने ये विचित्र वचन कहे कि जब किसी अन्य सभा-समाज के सभ्य आर्यसमाजियों को अपनी सभा में भरती होने के लिए प्रेरणा करें तो उन्हें यह उत्तर देना चाहिए कि यदि आपकी सभा के नियम और उद्देश्य आर्यसमाज से मिलते हैं, तो उसमें सम्मिलित होने से कोई लाभ नहीं है। यदि वे कहें कि हमारे नियम आर्यसमाज के नियमों से भिन्न हैं तो आर्यसमाजियों को उत्तर देना चाहिए कि आर्यसमाज के नियम अखण्डित हैं। जिस सभा के नियम खण्डित हैं , उसमें मिल जाने की हमें आवश्यकता नहीं है।''

''यथार्थ में रोम का अभ्रांतिशील पोप इससे अधिक और क्या कह सकता है। स्वामी जी गर्वित ब्राह्मणों के दावोंके विरोधी हैं। उनके कहने का यह तात्पर्य कदापि न होगा।''

''उन्होंने यह भी कहा था- ''अन्य देशियों के समाज में वैसा मित्रभाव और स्नेह नहीं हो सकता, जैसा कि एक ही मत और देश के आर्यसभासदों में है।''

''हमने आपके बिना किसी भी आर्यसमाजी को अपनी सभा में मिलाने का यत्न नहीं किया। हाँ, बम्बई, लाहौर और दूसरे नगरों के आर्यसमाजी हमारी सभा के सभासद् हैं। परन्तु उनको सम्मिलित होने के लिए हमने कभी नहीं कहा।''

''हमारे नियमों में आर्यसमाज से इतनी प्रतिकूलता है कि हम प्रत्येक सभ्य के धर्म की प्रतिष्ठा करते है। प्रत्येक मतावलम्बी को चाहे वह आर्यसमाजी हो, ईसाई हो, अथवा मूर्त्तिपूजक हो, हम सभा में मिला लेते हैं। ''

''इसी हेतु से मैंने आपको और एक-दो अन्य सज्जनों को सभा में भरती होने की सम्मति दी थी।''

''रही यह बात कि आर्यसामाजिक हममें मिले या न मिले, इसकी हमें परवाह नहीं है। इसमें उन्हीं की और कदाचित् समाजों की हानि है।''

''पुलिस के सबसे बड़े अधिकारी हंडरसन महाशय सभा में सम्मिलित हुए हैं। इससे हमारा अभीष्ट सिद्ध हो गया है। हमारी सभा में सम्मिलित होते समय उन्होंने कि मैं इसमें इसलिए मिलता हूं कि इससे बड़े-बड़े लाभ पहुँचते हैं। आप और मि. अल्काट ने 18 मास में यह बात प्राप्त कर ली है जो हम अंग्रेज बहुत वर्षों में भी नहीं कर पाए। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दुस्तानियों और अंग्रेजों के बीच जो खाई है, उसे आप भर रहे हैं। आपके कारण हम उनकी अधिक प्रतिष्ठा करने लगे हैं और वे हमसे घृणा छोड़ रहे हैं। वे हमारे काम की प्रतिष्ठा करते हैं और उसे श्रेष्ठ समझते हैं। मुझे आशा है कि जैसे उनके विचार हैं, वे वैसा ही कर दिखाएंगे। परन्तु स्वामी जी का प्रसंग चला तो उन्होंने भी यह कहा कि थ्यासोफी के समान स्वामी जी की सम्मति नहीं है उनके विचार अनिषेधक और उदार नहीं दिखते। आर्यसमाज ईश्वर को हर्ताकर्ता माननेवालों का एक जत्था है। ऐसी दशा में हम उनकों भाइयों के सदृश क्यों मानें......''इत्यादि।

क्रमशः

षष्ठ सम्मेलन

विषय: "महिला सम्मेलन"

१३४ वें ऋषि स्मृति सम्मेलन के तीसरे दिन विजयादशमी संवत २०७४ विक्रम शनिवार दिनांक ३० सितंबर २०१७ को "महिला सम्मेलन" माता चंद्रकांता जी भाटी की अध्यक्षता में ब्रह्मचारिणी दीप्ति के कुशल संचालन में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि श्रीमती डॉक्टर नूपुर भाटी, एडवोकेट, राजस्थान उच्च न्यायालय थीं एवं विशिष्ट अतिथि किशोर न्याय बोर्ड जोधपुर की सदस्या श्रीमती रूपवती जी देवड़ा थीं। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता द्रोणस्थली आर्श कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून से आयीं आचार्या अन्नपूर्णा जी थीं। सम्मेलन के आरंभ में विचार व्यक्त करतीं दीपाजी ने जीजाबाई, माता सुमित्रा, प्रताप–पुत्री, गार्गी, घोषा, भारती, मैत्रेयी के प्रेरक प्रसंगों का वर्णन करते हुए चेताया कि माताएँ और बेटियाँ रूढ़िवाद से बाहर आयें, ताकि परिवार और समाज स्वस्थ और सुखी हो सकें।

माता मालती जी ने "हम आये शरण तुम्हारी" गीत प्रस्तुत किया। माता ख्याति जी सोलंकी,प्रधान, महिला आर्यसमाज, सूरसागर ने विचार व्यक्त करते महर्षि द्वारा नारी उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए नारियों को महर्षि का ऋणी बताया। महर्षि की ही कृपा से आज नारियां समाज में पुरुषों का कंधे से कंधा मिलाकर और कहीं आगे बढ़ कर भी कार्य कर रहीं हैं। आयुष्मति दीप्ति एवं उनकी ब्रह्मचारिणी सहेलियों ने "मेरे देश की बहनों तुमको देख रही दुनिया सारी" और ऋषि के प्रतिकृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रेरक गीत "सदियों की गहरी निद्रा से, सोया देश जगाया किसने? दयानंद ने! दयानंद ने!" गाया।

अपने विचार व्यक्त करतीं विशिष्ट अतिथि श्रीमती रूपवती देवड़ा, सदस्य किशोर न्याय बोर्ड, जोधपुर ने कहा कि शिक्षा अर्जित करने के बाद भी नारी पीड़ित है और उस पीड़ित नारी तक न कानून की पहुँच ना समाज सेवा में लगे लोगों की। स्त्री और पुरुष की शारीरिक अवस्था में अंतर भी स्त्री के पिछड़ेपन का एक कारण है, जिसको तभी मिटाया जा सकता है, जब पुरुष वर्ग को नारी को तराशने की जिम्मेदारी अनुभव

है

कराई जाए कि वह नारी को तराशे, समय दे, और विश्वास दे । आर्य वीरांगना दल व आर्य समाज से आज बालिकाओं और नारियों को जोड़ने की आवश्यकता है। प्रातः उठने से लेकर रात्रि शैय्या में जाने तक निरंतर सेवा में लगी नारी को भी योग, प्राणायाम, ध्यान आदि के लिए परिजन समय देवें। नारी उत्थान को केवल एक दिवसीय महिला सम्मेलन का विषय ना बना कर प्रतिदिन नारी उत्थान के क्रियाकलाप हों। उन्होंने शीतकालीन अवकाश में महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में आगामी २५ दिसंबर से आर्य वीरांगनाओं के शिविर की घोषणा की। उन्होनें स्वयं को सौभाग्य शाली बताते हुए कहा कि आज जिस स्थिति में वे पहुँची हैं, उसमें उनके पति की प्रेरणा और पूरा पूरा सहयोग है और वे परम पिता से प्रार्थना करतीं है कि सभी नारियों को ऐसे सहयोगी पति मिले।

प्रमुख वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करतीं आचार्या अन्नपूर्णा जी ने कहा कि समाज में महिला समस्याग्रस्त है इसीलिए महिला सम्मेलन की आवश्यकता है और यह महिला सम्मेलन समस्या जनित ही होते हैं। पुरुषों को सामान्यतः कोई समस्या नहीं होती अतः पुरुष सम्मेलन अलग से नहीं होते। शास्त्रों ने माता की तुलना धरती से की है– सहनशक्ति, संसार की जननी, भविष्य निर्मात्री और नेता होने के कारण। आचार्या जी ने कहा कि जब शरीर में रोग हो जाते हैं तो नाड़ी देखकर निदान करते हैं। इसी प्रकार समाज की अवस्था देखने के लिए उस समाज विशेष में नारी की स्थिति का पता कर लो, समाज की स्थिति का पता लग जाएगा । ऋग्वेद में नारी को केतु अर्थात् ध्वजा कहा है। यजुर्वेद में नारी को शेरनी व सुंदर बताया है। स्त्री में ब्रह्मा बनने की योग्यता है, किंतु दक्षिण में आज भी देवदासी प्रथा कायम है। मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद से माता की महत्ता का पता चलता है। आचार्या जी ने सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि द्वारा नारी की महत्ता हेतु लिखे गए अंशो को भी उद्धृत किया और कहा माँ विदुशी होनी

चाहिए, तपस्वी होनी चाहिए, धार्मिक होनी चाहिए और यह तीनों ही गुण शिक्षा से वंचित करने पर और वेदाध्ययन से वंचित करने पर नारी में विकसित नहीं हो सकते। माता कैसी निर्मात्री होती है?इसका उदाहरण माता मदालसा के रूप में मिलता है कि वह चाहे तो अपनी संतान को ब्रह्मर्षि बना दें और वह चाहे तो चक्रवर्ती राजा बना दे। ध्यान मात्र सन्यासियों, वानप्रस्थी और ब्रह्मचारियों का काम नहीं है। महर्षि ने गृहस्थों के लिए भी प्रातः सायं न्यूनतम एक एक घंटे ध्यान करने का आदेश दिया है, जो महिलाओं पर भी लागू होता है। जीजाबाई की घटना सुनाते हुए आचार्या जी ने कहा कि वे जब बच्ची थीं, मार्ग पर जा रही थीं तो एक म्लेच्छ ने उनपर पीक थूका। पिता से शिकायत की पिता लाचार रहे। विवाह किया। विवाह के पश्चात पति को यह घटना बताई उन्होंने भी अनदेखी की। किंतु जब माँ बनी तो तय किया कि इस संतान तो मैं योग्य बनाऊंगी। बालक शिवाजी को संस्कार दिए और माता जीजाबाई के रूप में संसार के सामने आई। जिनका पुत्र सब संकटों को हरने वाला था। नारियों को यज्ञोपवीत से वंचित किया गया।

किंतु रामायण में आता है कि माता सीता यज्ञोपवीत धारण करतीं थीं। महिलाओं में दो वर्ग बन गए हैं। एक में श्रमिक और दलित महिलाएँ आती है, जिनका उत्थान करने वाला कोई नहीं है। दूसरी और आधुनिक महिलाएं हैं जिनके पास संस्कार अर्जित करने के लिए समय ही नहीं है। आचार्या जी ने कहा कि पत्नी उसे कहते हैं जो पतन से बचाए अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक पतन क्षेत्र में पतन से बचाए। रक्षा करने वाला पति होता है। माताएँ और बेटियाँ संस्कारों को जानें, वेद को जानें, गुरुकुल को जाने, ईश्वर को जानें, और फिर स्वयं को जानें तो नारी का उत्थान निश्चित है।

सम्मेलन में विचार व्यक्त करतीं मुख्य अतिथि समाजसेवी अधिवक्ता श्रीमती नूपुर भाटी ने संविधान के अनुच्छेद १४ व १५ के समानता के अधिकार सहित नारी सशक्तिकरण की नजीरों से महिलाओं को अवगत कराया। इन नज़ीरों में महिलाओं को संविधान के अनुसार समानता का अधिकार निश्चित कर सेना तक के नियमों को बदला गया है; वृद्धों को बेच दी गई बालिकाओं की रक्षा का भी विधान है; विधवाओं का अधिकार सुनिश्चित करने का विधान है; डायन प्रथा के विरुद्ध कानूनी प्रावधान है; सौंदर्य के नाम पर माँ बनने के नैसर्गिक अधिकार को प्रभावित करने के नियमों को भी रद्द कर देने के प्रावधान है। मुख्य अतिथि ने भारत की विधि जगत में भी पुरुषों की प्रधानता को रेखांकित करते हुए बताया कि आज तक भारत के सर्वोच्च न्यायालय में २२६ पुरुषों के मुकाबले मात्र ६ महिला न्यायाधीश नियुक्त हुई भारत के उच्च न्यायालयों में से ६ उच्च न्यायालयों में एक भी महिला न्यायाधीश नहीं है। सबरीमाला घटना को रेखांकित करते हुए उन्होंने संकीर्ण दृष्टिकोण पर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि वयस्क महिला की भी पहचान धुंधली है– एक नाबालिग के समान। अपनी स्वतंत्र पहचान की उसे अभी तलाश है। इसके लिए सोच में परिवर्तन आवश्यक है, महिला के कौशल को उजागर करना आवश्यक है। सम्मेलन की अध्यक्षा माता चंद्रकांता जी भाटी ने सभी वक्ताओं का और श्रोताओं का आभार व्यक्त किया और सब को आशीर्वाद प्रदान किया, दयानंद का धन्यवाद किया कि जिनके कारण सभी इस सम्मेलन में उपस्थित हुए और अपनी अपनी बात रख सके।

आर्यसमाज सरदारपुरा में वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरदारपुरा का ७२ वॉं वार्षिकोत्सव व महिला आर्यसमाज सरदारपुरा का वार्षिकोत्सव दिनांक २५ व २६ नवम्बर २०१७ को मनाया जायेगा । इसमें बाहर से भजनोपदेशक एवं विद्वानुगण पधार रहे है । दिनांक २५-११-२०१७ को प्रातःकाल ८ बजे से १० बजे तक यज्ञ, भजन व विद्वानों के प्रवचन व सायंकाल ५ से ८ बजे तक यज्ञ, भजन व ऋषि दयानन्दजी के जीवन पर विद्वानों के प्रवचन होंगे । दिनांक २६-११-२०१७ को प्रातःकाल ८ बजे से १ बजे तक यज्ञ, भजन व विद्वानों के मार्मिक प्रवचन तथा अतिथियों का स्वागत, समाज की गतिविधिया मंत्रीजी व धन्यवाद प्रधानजी द्वारा होगा व अन्त में ऋषि लंगर आयोजित होगा ।

सप्तम् सम्मेलन

विषयः "मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के जीवन से शिक्षा"

महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में १३४ वें ऋषि स्मृति सम्मेलन के तीसरे दिन विजयादशमी संवत २०७४ विक्रमी शनिवार दिनांक ३० सितंबर २०१७ को "मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से शिक्षा" विषयक सम्मेलन में भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ के प्रेरक भजनों के बाद विचार व्यक्त करते हुए श्री जगदेवजी विद्यालंकार ने कहा की रामायण और महाभारत वें ग्रंथ है, जिनसे हजारों लोगों ने अपना साहित्य बनाया है, उपजीव्य बनाया है। महर्षि नारद द्वारा श्रीराम के गुणों का वर्णन महर्षि वाल्मीकि के समक्ष करने और क्रौंचवध के समय महर्षि वाल्मीकि के अंतर में श्लोक के छंद की रचना आने के बाद रामायण निर्मित होने के इतिहास को बताते हुए श्री विद्यालंकार ने कहा कि श्रीराम की सर्वश्रेष्ठ विशेषता उनका आदर्श राजा होना थी। उन्होनें भवभूति के उत्तररामचरित को उद्धृत किया:

स्नेहं, दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा (उ.रा.च.)

अर्थात् प्रजा के अनुरंजन के लिए कोई भी प्रेम, कोई भी मैत्री, यहाँ तक कि जानकी तक को छोड़ने में मुझे कष्ट नहीं होगा। प्रजारंजनार्थ त्याग का यह चरम है।

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।।उ. रा. च

(बाहर से) वज्र जैसे कठोर महापुरुषों का अंतःकरण पुष्प जैसा कोमल होता है। ऐसे लोकोत्तर अंतःकरण को कौन समझ सकता है ? पश्चात् तुलसीदास को उद्धृत किया:

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि।। रा.च.मा.उत्तरकांड।। इसमें काकभुशुंडि कहते हैं – हे गरुड़! राम का चित्त वज्र से भी अत्यंत कठोर और फूल से भी अत्यंत कोमल है। तब कहिए, वह किसकी समझ में आ सकता है? श्री विद्यालंकार ने कहा कि राज्य को श्रीराम कंदुक के समान समझते थे। उनके आदर्श पर कुछ लोगों ने धब्बे लगाने का प्रयास किया है। किंतु भांबूकवध और सीता वनवास जैसे आक्षेपकारी प्रसंग उत्तरकांड में आते है जो कि फलश्रुती के बाद होने से भी प्रक्षिप्त माना गया है।

उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने महर्षि दयानंद सरस्वती की दृष्टि पा ली, वे देश की चिंता करेंगे, धर्म की चिंता करेंगे और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की चरित्र का अनुकरण करेंगे; उनके जीवन से शिक्षा लेंगे। वे ना तो उन्हें अतिमानवीय और और न परमात्मा बताकर उनके कृत्यों को अग्राह्य बनाएंगे।

आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश ने रामायण के उद्धरणों से बताया कि श्री राम मानव थे और त्रेतायुग में महाराज दशरथ के घर जन्म लेने से पूर्व भी कई जन्म ले चुके थे।

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि।
तत्रायमद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं यदहं विशामि।। वा.रामा. अरण्य.६३–४।।

आचार्यजी ने कहा, हमें उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, जिसे हमारे देवता पसंद करते हैं। कहा भी है "महाजनो येन गतः स पंथाः" अर्थात महापुरुषों के मार्ग का अनुसरण करना ही चाहिए। रामायण में महर्षि नारद और महर्षि वाल्मीकि के संवाद में श्री राम के अनुकरणीय गुणोंका वर्णन है। उनमें कहीं भी राम को परमात्मा या अवतार नहीं बताया है।

रामायण में एकाधिक स्थानों पर श्री राम को सबसे बड़ा धनुर्वेदज्ञ बताया है। जनकपुरी में जब उन्होंने धनुष भंग किया तो उससे इतनी बड़ी भयानक ध्वनि हुई कि श्री राम, श्री लक्ष्मण, महर्षि विश्वामित्र और महाराज जनक को छोड़कर के सें सब लोग नीचे गिर गए।

निपेतुश्च नराः सर्वे तेन शब्देन मोहिताः।
वर्जयित्वा मुनिवरं राजानं तौ च राघवौ।।बाल.६७–१६।

श्री राम का जो परिचय ऋश्यमूक पर्वत पर हनुमान द्वारा सुग्रीव को दिया गया, उसमें भी श्री राम के गुणों का वर्णन मिलता है। उस प्रकरण से पता चलता है कि श्रीराम

वेदज्ञ थे। वार्तालाप में हनुमानजी की सुसंस्कृत वाणी से उनके गुणों को पहचानकर श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी से कहते हैं:

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।वा.रा.कि.३–२८

अर्थात् जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान् नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।

प्रसंगवश आचार्य जी ने ३७ वर्ष पूर्व के सर्व शाखा सम्मेलन में श्री निरंजनदेव तीर्थ के उस कथन को स्मरण किया कि हमारा नाम हिंदू है। तब उन्हें बताया गया कि आर्य शब्द वेद में ६0 बार आया है। श्रीराम के वनगमन के बाद अयोध्या पहुँचे भरत जी ने माता कौशल्या से समक्ष रामायण में तैंतीस पाप बताए और हर श्लोक के अंत में आर्य शब्द से श्रीराम को इंगित किया गया है, जो आर्य शब्द की उत्कृष्टता को और श्री राम के आर्यत्व को दर्शाता है। आर्य के लक्षण है वैर बुद्धि ना रखना, अकार्य नहीं करना, सत्य वाक्य बोलना, दृढ़व्रती रहना इत्यादि।

इस सम्मेलन में विचार व्यक्त करते हुए स्वामी वेदानंद जी महाराज ने बताया कि व्यक्ति को जानने की चार कसौटियों– शिक्षा, खानपान, संगत और तत्व– पर कसने पर इस भूमि पर श्रीराम जैसा उत्तम कोई नहीं मिलता। श्री राम और माता कैकेयी का संवाद:

नाहमर्थपरो देवि लोकमावस्तुमुत्सहे।
विद्धि मामृषिभिस्तुल्यं केवलं धर्मास्थितम।वा.रा.अयो.१६.२0

उद्धृत करते हुए स्वामी जी ने बताया कि श्रीराम माता कैकेयी से कहते हैं कि हे देवी! मैं धन का उपासक होकर संसार में नहीं रहना चाहता। आप विश्वास रखो। मैं भी ऋषियों के तुल्य केवल और केवल धर्म में ही स्थित हूँ। ऐसे धर्म में ही स्थित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का पूरा का पूरा जीवन अनुकरणीय है।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉक्टर वेदपाल जी ने रामायण में आए शंबूक वध एवं सीता निष्कासन जैसे कई अविश्वसनीय प्रसंगों को कई पौराणिक संदर्भों तथा प्रक्षिप्तिकरण से जोड़कर देखने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि साहित्य के अलंकारों में अतिशयोक्ति भी होती है। रचयिता द्वारा रचना के मुख्य पात्र की प्रधानता सुनिश्चित करने हेतु अन्य पात्रों को गौण दर्शाया जाता है। अतिशयोक्ति भी की जाती है; अतिरंजना भी की

जाती है। हमें अपना विवेक काम में लेना चाहिए, अनुमान काम में लेना चाहिए।

उन्होंने श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों से संबंधित ग्रंथों में प्रक्षिप्तिकरण की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि ईसा पर ईसाईयों का एकाधिकार है, मोहम्मद पर मुसलमानों का एकाधिकार है। किंतु श्रीराम और श्रीकृष्ण पर आर्यों का या हिंदुओं का कोई एकाधिकार नहीं रहा। इसलिए जिसने जैसी चाही वैसी ही छेड़छाड़ इन दोनों महापुरुषों के जीवन चरित्र से करने की हिमाकत की। प्रक्षिप्तिकरण का हाल बताते हुए विद्वान् वक्ता ने भविष्य पुराण में रविवार को संडे एवं फागुन को फरवरी नाम प्राप्त होने की बात बताते हुए कहा कि यह प्रक्षिप्तिकरण अंग्रेजों एवं अंग्रेजी के भारत में आने के पश्चात का है, जिसे भी पुराण नाम दे दिया। उन्होंने बताया कि जब पुराणों के तथाकथित रचयिता महर्षि व्यास लगभग ५२०० साल पूर्व हुए थे तो अंग्रेजी जमाने का विवरण पुराण में कैसे? यह प्रमाण है कि पुराण प्राचीन ग्रंथ नहीं है।

अध्यक्ष जी ने कहा कि श्रीराम से संबंधित विवादास्पद घटनाएँ प्रमाण नहीं रखतीं। लेकिन हमारे पौराणिक बंधु है कि ना तो वे इन्हें प्रक्षिप्त मानने को तैयार है और ना इस प्रक्षिप्तिकरण–जनित प्रश्नों का जवाब देने को। उन्हें सिर्फ अपने स्वार्थ से मतलब है, जिसके चलते देश, धर्म और महापुरूषों की गरिमा कम होती है।

इस सम्मेलन का संचालन इंटरनेट पर वेदों और महर्षि दयानंद के विचारों को प्रचारित और प्रसारित करने में तन मन धन से संलग्न श्री गौरव आर्य ने किया।

मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन

आर्य समाज मन्दिर ,महर्षि पाणिनिनगर पूँजला जोधपुर के प्रधान कैलाशचन्द्र आर्य ने बताया कि समाज के लगभग चालीस मेधावी आर्यवीरों और आर्य वीरांगनाओं को आर्यसमाज द्वारा शिक्षण सामग्री प्रदान कर उनका उत्साहवर्द्धन किया गया।

अष्टम् सम्मेलन

विषयः "अतिथि के लक्षण और अतिथि यज्ञ"

महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में २८ सितम्बर से ०२ अक्टूबर २०१७ तक हुए पांच दिवसीय १३४ वें ऋषि स्मृति सम्मेलन के चौथे दिन आश्विन शुक्ल एकादशी संवत २०७४ विक्रमी रविवार दिनांक ०१ अक्टूबर २०१७ को "अतिथि के लक्षण और अतिथि यज्ञ" में सर्वप्रथम श्री कैलाश कर्मठ ने स्रोताओं को आनंदविभोर करते हुए भजन प्रस्तुत किये।

पश्चात व्याख्यान करते हुए अहमदाबाद विश्वविद्यालय से पधारे श्री कमलेशकुमार जी चौकसी ने कहा कि आप सबसे पहले महर्षि दयानंद और उनके विचारों को जानें। अपने माता–पिता, वेदों को जाने और स्वयं को जाने। आचार्य जी ने सुख, शांति और आनंद में अंतर बताया। उन्होंने कहा कि सजीव को भोग लगाने पर आनंद अनुभव होता है और निर्जीव को भोग लगाने पर–क्योंकि वह खाता नहीं इसलिए–आनंद आता नहीं और आता है तो झूठा होता है। उन्होंने उदाहरण दिया कि एक माँ गर्मी से परेशान है। वह ठंडे पानी में नहाती हैं, तो उसे सुख मिलता है। किंतु जब वह अपने छोटे से पुत्र को भीषण गर्मी में ठंडे पानी से नहलाती है तो सुख तो ठंडे पानी से पुत्र को होता है, किंतु माँ आनंदित होती है। इसी प्रकार जीवित माता–पिता की सेवा में आनंद होता है, मृतकों के नाम पर तो हम स्वयं खाते हैं। जिस प्रकार बलिवैश्वदेव यज्ञ में हम प्राणी मात्र के हित का चिंतन करते हैं, तो अतिथि भी उससे अछूता नहीं होता। इसलिए हमें योग्य अतिथियों का भी मीठे वचनों, सम्मान, द्रव्यादि से आदर करना ही चाहिए।

डॉ वेदपाल जी ने संक्षेप में सुख, शांति और आनंद की सुस्पष्ट व्याख्या करने के बाद महर्षि दयानंद द्वारा बताये अतिथि के लक्षणों का उल्लेख करते हुए कहा कि पूर्ण विद्वान, परोपकारी, जितेंद्रिय, धर्मात्मा, धर्मशील, सत्यवादी, सत्याचारी, छलादि दोषों से रहित व्यक्ति अतिथि होता है। उन्होंने बताया कि तैत्तिरीय उपनिषद शिक्षा वल्ली के अनुसार पंचमहायज्ञ गृहस्थ का परम् कर्तव्य है, गृहस्थ का नित्य कर्म है। इन पंचमहायज्ञों में अतिथि यज्ञ भी एक महायज्ञ है। आचार्य जी ने कहा कि जो हमसे देश ना करें, जिससे हमारा देश ना हो; हमारे स्वागत से जो दुविधाग्रस्त ना हो; घर में जाने वाला बिना सींग का बैल है, जो अतिथि की प्रतीक्षा करे– उसी आतिथेय के घर जाना चाहिए और अतिथि को भी मर्यादा में रहना चाहिए। उन्होंने एक आख्यान बताया कि कुरुक्षेत्र में पत्नी और दो संतान वाला एक ब्राह्मण था जो कई दिनों से भूखा था। खाने को कुछ भी नहीं था अचानक थोड़ा अंश खाने के लिए मिल गया। खाना शुरु नहीं किया था एक अतिथि आ गए। अतिथि का आतिथ्य किया और भोजन के बारे में पूछा। अतिथि के कहने पर पहले एक भाग दिया। अतिथि खा गया। दूसरा भी खा गया। तीसरा भी खा गया और चौथा भी खा गया। चौथा भाग खाकर अतिथि बोला– बस अब मुझे और नहीं चाहिए; अब मैं तृप्त हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि सच्चा आतिथेय वही है जो स्वयं भूखा रहकर भी अतिथि का सत्कार करे। यही अतिथि यज्ञ होता है।

आचार्य आर्यनरेश जी ने व्याख्यान करते बताया कि यह विषय कायाकल्प का विषय है। सभी समस्याओं के समाधान का विषय है। ठगों से अवश्य सावधान रहें। उन्होंने बताया कि पांचों महायज्ञों के दो दो भाग है। ब्रह्म यज्ञ के दो भाग स्वाध्याय और संध्या है। देव यज्ञ के दो भाग जड़ को खिलाना, अग्नि को खिलाना और दक्षिणा है। पितृ यज्ञ के दो भाग सेवा और शुश्रूषा है। बलि वैश्वदेव यज्ञ के दो भाग अग्नि और प्राणिक है। अतिथि यज्ञ के दो भाग यथा योग्य भोजन देना और उनसे शिक्षा लेना है। अतिथि वेद का विद्वान्, योगाभ्यासी, आयुर्वेदज्ञ, देशभक्त, पंचयज्ञ के संकल्प वाला होना चाहिए। उन्होंने एक आख्यान सुनाया कि एक जोगी अलख निरंजन करता हुआ द्वार पर आया। गृहस्वामिनी माता ऊपर

थी। अतिथि को ऊपर बुलाया और बिठाया। अपना कार्य समाप्त करके अग्निहोत्र संपन्न करके वह बोली– महाराज! कोई उपदेश दीजिए, अष्टांग योग का। अतिथि रोने लगा और कहा माता मैं तो सिर्फ रंगा हुआ अनधिकारी भिक्षुक हूँ। अतः जाता हूँ। फिर भी माता ने उसे खाना खिलाया, रवाना किया। छः वर्ष बाद द्वार पर एक आवाज आई– ओम् तत्सत्! वही साधु था। माता ने भीतर बुलाया; सत्कार किया और उपदेश देने को बोला, तो उसने कहा– बोलो किस पर उपदेश करूं ? माता! यह तो तेरी ही कृपा है; तूने ही मुझे जगाया था! यह होता है अतिथि यज्ञ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में दानवीर आर्य श्रेष्ठी ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आर्यजनों को ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराते हुए कहा कि स्वामी महर्षि दयानंद सरस्वती महाराज नौ बार मेरठ में आए और उनके अज्ञातवास का काल मेरठ में काली पलटन की छावनी में औघड़नाथ के मंदिर में गुजरा, जहाँ स्वामीजी महाराज जल पिलाते थे और आने वाले सैनिकों को प्रेरणा दे उन्होंने ही सिपाही क्रांति कराई थी। महर्षि के गुरु स्वामी विरजानंद जी महाराज, उसी समय के स्वामी पूर्णानंद जी महाराज, स्वामी ओमानंद जी महाराज, सब क्रांतिकारी सन्यासी थे। मुजफ्फरनगर जिले में एक खाप के पास उपलब्ध दस्तावेजों में यह सब प्रमाण संग्रहित है।

एक और घटना सुनाते उन्होनें कहा कि भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह जी घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे मार्ग में बीसेक लोग "सत्यार्थप्रकाश" पर चर्चा कर रहे थे। किंतु "सत्यार्थप्रकाश" के अभाव में निर्णय नहीं कर पा रहे थे। तब श्रीं अर्जुन सिंह जी साठ किलोमीटर का चक्कर लगाकर के सत्यार्थ प्रकाश लेकर के आए और उन्हें दी। भगत सिंह की डायरी के अनुसार देश में थे तो सिर्फ ५ प्रतिशत आर्य समाजी! लेकिन देश के लिए जेल जाने वालों में ८५ प्रतिशत आर्य समाजी थे। एक और संस्मरण सुनाते उन्होंने कहा कि भारत के प्रधान मंत्री बहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक थे एवं प्रधानमंत्री बनने के बाद अपने गांव की सुध लेने भी पहुंचे थे।

ठाकुरसाहब ने आह्वान किया– तड़प पैदा करो! पाखंड से बचो! बच्चों को भी बचाओ।

श्री रामचंद्र जी देहलवी के जीवन की एक घटना बताते हुए ठाकुर साहब ने कहा कि वह सुनार का काम करते थे। सत्यार्थप्रकाश पढ़ते थे। गांधी मैदान में घंटों व्याख्यान देते रहते थे। एक पौराणिक मित्र से मिलने गए। वह पिण्डी (शिवलिंग) की पूजा कर रहा था। देहलवी जी टहलते रहे। एक कुत्ता आया। देहलवी जी ने दुत्कारा। फिर आया, फिर दुत्कारा। फिर कुत्ते ने देखा कि देहलवी जी कुछ करते तो नहीं है। वह ढ़ीठ बनकरके फिर आया। इस बार गया नहीं, तो जिस पिण्डी की उनका मित्र पूजा कर रहा था, देहलवी जी ने वही उठाकर कुत्ते को दे मारी। मित्र झल्लाया तो देहलवी जी ने मित्र से कहा – जिंदगी में पहली बार तुम्हारी पिंडी कुछ काम आई है। इतनी पूजा करके तुमने क्या पाया? मित्र जाग गया!

ठाकुर साहब ने महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास को एक लाख का चैक तुरंत भैंट किया और आवश्यकता होने पर और अधिक दान देने का संकल्प किया।

उन्होंने माताओं से विशेष रूप से कहा कि वे पाखंड से बचें और बच्चों को बचाएँ। क्योंकि बच्चों में संस्कार का मुख्य दायित्व उन्हीं का है। अतिथियों के मामले में भी ठगों से बचें और सज्जनों का सत्कार अवश्य करें।

मूक बधिर आर्य वीरों ने पदक जीते

आर्य समाज मन्दिर,महर्षि पाणिनिनगर पूँजला जोधपुर के प्रधान कैलाशचन्द्र आर्य ने बताया कि समाज के मूकबधिर आर्यवीरों ने जयपुर जिला बधिर खेल एसोसिएशन द्वारा 7 व 8 अक्टुम्बर, 2017 को आयोजित द्वितीय एथेलीट्स प्रतियोगिता में 100 मी.दौड़ में लिखमाराम ने गोल्ड व बाबूलाल ने रजत पदक तथा 200 मी. दौड़ में हनुमानाराम ने रजत पदक जीतकर अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का लौह मनवाया।

नवम् सम्मेलन

"युवा सम्मेलन"

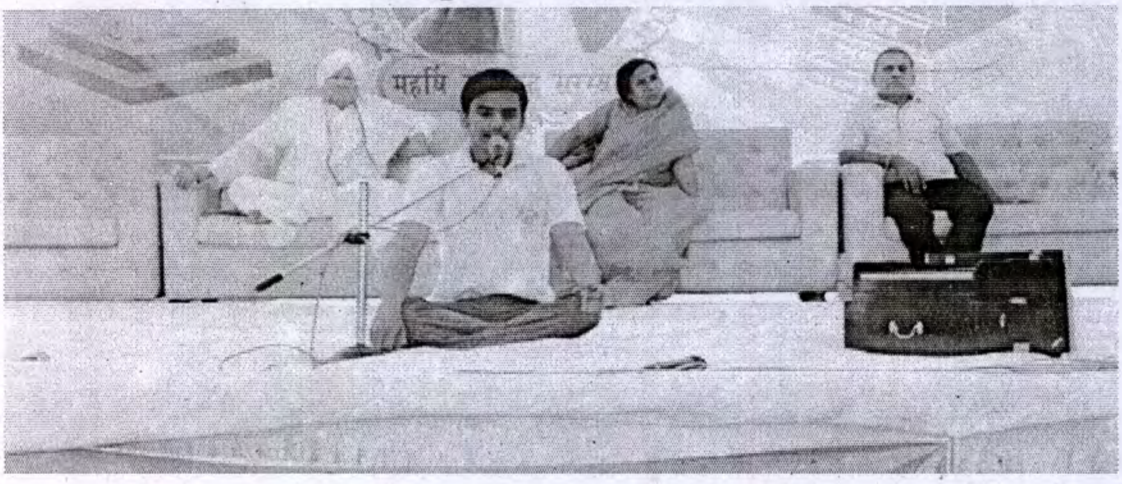

महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में १३४ वें ऋषि स्मृति सम्मेलन के चौथे दिन आश्विन शुक्ल एकादशी संवत २०७४ विक्रमी रविवार दिनांक 01 अक्टूबर २०१७ को आर्य वीर दल जोधपुर के संचालक एवं आर्य समाज महर्षि पाणिनि नगर के डॉक्टर महेश आर्य के संचालन में आरंभ "युवा सम्मेलन" की अध्यक्षता उद्गीथ साधना आश्रम के आचार्य श्री आर्यनरेश जी ने की।

सम्मेलन के आरंभ में बाड़मेर के आर्यवीर श्री महिपाल ने "जिनमें हौसला होता है बाजी वह जीतता है" शीर्षक कविता अपनी ओजस्वी वाणी में सुनाई। मेड़ता से आए श्री हरिओम जी तरंग ने "गीता–ज्ञान सुनाते रहे, रथ पार्थ का चलाते रहे" शीर्षक गीत प्रस्तुत किया। आर्यसमाज पाणिनीनगर से आए श्री भगवान परिहार ने एक गीत "सब देशों का एक दिन भारत ही सरदार था" प्रस्तुत किया। सुश्री श्रीदेवी सोनी ने "आए हो जिंदगी में, कुछ करके दिखा देना; आए हो मानव जीवन में, यूं ही गवा न देना" गीत अपनी सुरीली वाणी में प्रस्तुत किया। मुक्केबाजी प्रशिक्षक श्री विक्रम सिंह ने भी युवा सम्मेलन को संबोधित किया।

द्रोणस्थली आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए। बीच में गलत सिद्धान्तों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हुए पूछा कि "हमारे पूर्वज बंदर है" ऐसा हमें पढ़ाया जाएगा तो हम क्या बनने की प्रेरणा पाएंगे? एक गीत के माध्यम से प्रश्न खड़ा किया "शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, जब नैतिक आधार नहीं"। "हम स्वार्थ साधना की आंधी में वसुधा का कल्याण न भूलें" "उठो जवानों देश की वसुंधरा पुकारती यह देश है पुकारता पुकारता, पुकारती मां भारती" भी प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के संचालक डॉक्टर महेश आर्य ने कहा कि युवा अपनी शक्ति का उपयोग बुजुर्गों के मार्गदर्शन में करें। युवा और बुजुर्ग, इन दोनों के सामंजस्य में क्षात्र और ब्राह्म शक्तियाँ एक होती है, जो किसी भी समाज को आगे ले जाने में समर्थ है।

आर्य समाज महा मंदिर स्थित क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल व्यायामशाला के आर्यवीर एवं राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्णपदक प्राप्त योग खिलाड़ी श्री अशोक आर्य ने अष्टांगयोग का परिचय दिया और कहा कि योग के आठ अंगों को धारण करें, इनमें से यम नियम की पालना व्यवहार में सुनिश्चित करें, आसन प्राणायम को साधें! योग से सभी प्रकार की उन्नति होती है। मनुष्य ज्ञानी बनता है और ज्ञानी व्यक्ति गलती नहीं करता है। योग के बिना उन्नति संभव नहीं है, इसलिए योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ।

आर्यवीर श्री राधेश्याम आर्य ने विनीत चौहान की लिखी वीर रस की एक कविता प्रस्तुत की। वरिष्ठ आर्यवीर, आर्यसमाज बागर के प्रधान श्री तेज प्रकाश जी आर्य ने आर्य वीर दल के पुराने समय की याद करते हुए पुनः जागृति का आव्हान किया, ताकि युवक अन्यत्र गलत जगहों पर नहीं फँसें और आर्य वीर दल जैसी संस्कार दाता व्यायामशालाओं में अपनी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करें।

सम्मेलन के अध्यक्ष पूजनीय आचार्य आर्यनरेश जी ने पारस्परिक विमर्श पर बल दिया। अपनी चिरपरिचित शैली में उदाहरण सहित वार्ता करते हुए उन्होंने कहा कि भारत का व्यक्ति भारतीय नहीं रहा, वह अंग्रेज बनना चाहता है। समाज में मूल्यों का पतन इतना हो गया है कि बुरे काम अच्छे माने जाने लगे हैं। लोगों की प्राथमिकताएं इतनी बदल चुकी है कि टेलीविजन देखने के

लिए बहुत समय मिल जाता है, किंतु शाखा में या आर्य समाज में आने के लिए समय नहीं मिलता। सत्संग में नहीं आना मूल खराबी बन चुका है, तो कल्याण कहां से हो सकता है? यदि समाज को, राष्ट्र को, युवकों में गिरते जीवन मूल्य की चिंता है, तो पढ़ाई के अंकों की जगह चारित्रिक विकास के अंको को प्राथमिकता देनी होगी। परिवार में प्रत्येक रात्रि सत्संग होना चाहिए, क्योंकि धर्म मुख्य है धन नहीं! जिस कौम को महर्षि दयानंद सरस्वती जैसे व्यक्तित्व के लिए, उनके सिद्धांतों के लिए, अपने कल्याण के सिद्धांतों के लिए समय नहीं; उस कौम का उत्थान भी किसी सूरत में संभव नहीं। गहराई से विचार करके देखें तो हमारे मूल में भूल हो चुकी है। उन्होंने उपस्थित आयोजनों से आह्वान किया कि आर्यसमाजों में होने वाली साप्ताहिक सत्संग में प्रति माह एक सत्संग युवाओं को एवं दूसरी सत्संग महिलाओं को संचालित करने हेतु दे दें। धर्म का उत्थान सुनिश्चित करने के लिए आचार्य श्री ने सुझाव दिया कि जो धर्म के मार्ग पर नहीं चल रहा है, उन्हें संपत्ति से वर्जित किया जाए।

आर्य समाज मगरा पूँजला जोधपुर का ८१ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जोधपुर स्थित आर्य समाज मगरा पूँजला जोधपुर का ८१ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 0८, 0६ व १0 अक्टूबर २०१७ को आयोजित किया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् स्वामी विदेह योगी जी (कुरूक्षेत्र) व सुदेश जी आर्या (दिल्ली) ने प्रातःकालीन सत्र में 0८ बजे से ११ बजे तथा सायंकालीन सत्र में ७:३0 से १0:00 बजे तक परिवार की सुख समृद्वि, बच्चों में सुसंस्कार भरने और जागृत करने हेतु वैदिक सिद्वान्तों से ओतप्रोत प्रवचन एवं भजनों के द्वारा लोगों को लाभान्वित किया।

दिनांक 0८ अक्टूबर को स्वामी विदेह योगी, संरक्षक जगदीश सिंह आर्य तथा राजेन्द्रप्रसाद वैष्णव द्वारा ध्वजारोहण किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा विमल जी शास्त्री ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंच महायज्ञ में ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, अतिथि यज्ञ, पितृयज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ मानव कल्याणार्थ बताए, जिनके द्वारा जीवन में सुख प्राप्त कर सकते है।

स्वामी विदेह योगी ने अपने प्रवचन में कहा कि सन्तान को संस्कार रूपी धरोहर देने पर ही संस्कृति की रक्षा होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्वकल्याणार्थ वेद की महत्ता बताई। अन्धविश्वास एवं मत मतान्तर के कारण दुःख व्याप रहा है। सुख के लिए वैदिक सिद्वान्तों के अनुरूप जीवन बनाएँ। सुदेश जी आर्या ने अपने सुमधुर भजनों के द्वारा प्रभुभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति के भावों से युक्त भजन प्रस्तुत कर वातावरण को संगीतमय बनाया। संरक्षक जगदीशसिंह आर्य, पूर्व मन्त्री जयसिंह भाटी द्वारा स्वामी विदेह योगी तथा आर्य वीरांगना दल राजस्थान की संचालिका एवं किशोर न्याय बोर्ड, जोधपुर की सदस्य श्रीमती रूपवती देवड़ा द्वारा सुदेश जी आर्या का सम्मान किया गया।

वर्षिकोत्सव में महेष गहलोत, हँसराज गहलोत, हरिसिंह साँखला, हुकमसिंह साँखला, अर्जुनसिंह गहलोत, जयसिंह भाटी, ब्रह्मसिह परिहार, थानसिंह गहलोत, शैलेन्द्र जाँगड़, लिखमाराम सुथार, भीकसिंह गहलोत, प्रेमसिंह साँखला आदि का सहयोग रहा।

आर्य समाज के प्रधान श्री सम्पतराज देवड़ा ने कार्यक्रम की सफलता के लिए विद्वानों, कार्यकताओं, कार्यकारिणी सदस्यों, दानदाताओं व आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा भविष्य में भी इसी तरह सहयोग बनाए रखने की अपील की।

दशम् सम्मेलन

विषय: "योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन का सिंहावलोकन"

महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली जोधपुर के महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में पाँच दिवसीय १३४ वें ऋषि स्मृति सम्मेलन के चौथे दिन आश्विन शुक्ल एकादशी संवत २०७४ विक्रमी रविवार दिनांक ०१ अक्टूबर २०१७ को "योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन का सिंहावलोकन" विषयक सम्मेलन में ओजस्वी भजनोपदेशक श्री कैलाश जी कर्मठ के सुन्दर भजनों व प्रेरक गीतों के बाद अपने उद्‌गार में डॉ वेदपाल जी ने कहा कि स्वयं को परार्थ को समर्पित कर देने वाले के प्रति अतिरंजनाएँ और अतिशयोक्तियाँ जुड़ जाती है। ऐसा ही श्रीकृष्ण के साथ घटित हुआ। मानव के अवचेतन मन की तरह एक सामाजिक अवचेतन मन भी होता है, जो स्वयं को परार्थ समर्पित कर देने वाले के प्रति अतिरंजनाएँ –चाहें वे सत्य हो या काल्पनिक, उसके साथ जोड़ने लगता है; जो अतिशयोक्तियों में भी बदल जाती है और मिथक में भी। परिणाम यह होता है कि एक बालक अतिशयोक्तियों के कारण चमत्कारिक बालक हो जाता है।

इन्हीं अतिरंजनाओं, अतिशयोक्तियों और मिथकों के कारण एक साधारण युवा बलिष्ठ योद्धा नहीं, बल्कि उसमें अतिमानवीय गुणों का आरोपण होकर वह अतिमानवीय (सुपरमैन) बन जाता है। श्रीकृष्ण बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे कठिन से

कठिन समस्याओं के समाधान करते कराते प्रबुद्ध या "वाइज ओल्ड मैन" अथवा संकटनाशक या "ट्रबल शूटर" है। किन्तु अतिरंजनाओं के चलते वे अवतार और मिथक बन गए। ऐसी अतिरंजित, अतिशयोक्तिपूर्ण, मिथकीय प्रक्षिप्तिकरण की विडंबना केवल हमारे महापुरुषों के साथ हैं। दुनिया में अन्यत्र कहीं भी ऐसा नहीं है। इस प्रक्षिप्तिकरण ने श्रीकृष्ण के जन्म के प्रसंग को कितना उलझा दिया! कंस अपनी चचेरी बहन देवकी की विदाई में रथ हाँक कर चला और आकाशवाणी हुई कि तू किसे विदाई दे रहा है, इसका आठवां पुत्र तेरे विनाश का कारण बनेगा! अब यह आकाशवाणी कैसे संभव है ? "पूतना" एक बालघातक रोग है, जिसे श्रीकृष्ण ने पछाड़ा अर्थात् पार पा लिया! लेकिन कोई सोचता नहीं चाहता!

इन्हीं सब विडंबनाओं के बीच एक महापुरुष देव दयानंद हुए हैं। सामान्य विवेक का व्यक्ति श्रीकृष्ण के इस अतिरंजित, अतिशयोक्तिपूर्ण, मिथकीय जीवन चरित्र में उलझकर कोई एक निश्चित धारणा नहीं बना सकता। किंतु दयानंद तो महर्षि थे। उन्होंने कहा है कि श्री ष्ण एक आप्त पुरुष थे जिन्होंने जन्म से मृत्यु पर्यंत कोई भी अनुचित कार्य नहीं किया। श्री कृष्ण का चरित्र महाभारत में अति उत्तम है, भागवत ने श्रीकृष्ण के चरित्र का नाश किया है। किंतु हमारे पौराणिक भाइयों ने श्रीकृष्ण को गोपीजन प्रिय बना दिया और राधा का तो इतना प्रभाव बढ़ाया कि कह दिया राधा के बिना कृष्ण आधे। राधा का नाम न विष्णु पुराण में है ना भागवत में है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में राधा का नाम मिलता है, किंतु प्रेयसी के रूप में नहीं। हां, कोई समझदार विदेशी यदि इसे ध्यान से पढ़े और पूछे कि राधा कृष्ण की माता है, पुत्री है, मामी है या प्रेयसी है – तो कोई पौराणिक उत्तर नहीं दे सकेगा। विडम्बना यह है कि पौराणिक इस असत्य को त्यागेगा भी नहीं। यह पौराणिक जड़ता बहुत हानिकारक है।

किंतु हमारे आदरणीय तो वह नीतीज्ञ श्रीकृष्ण है जो राजसूय में अग्रपूजा हेतु सर्वाधिक योग्य है, पितामह भीष्म द्वारा प्रशंसित है, जो धनुर्वेद में निष्णात है। शिशुपाल ने भी श्रीकृष्ण की अग्रपूजा से पूर्व जो जो अपशब्द श्रीकृष्ण को कहे थे, उनमें कहीं भी राधा का नाम नहीं लिया। हमारे आदर्श वे नीतीज्ञ श्रीकृष्ण है कि जब संजय दूत बनकर पांडवों के पास गए, तरह तरह से शब्द जाल में उलझाकर उन्हें भयभीत करने का प्रयास किया। तब जाल से पाण्डवों को निकालते हुए श्रीकृष्ण ने संजय से कहा था– आप चलिए! हम प्रस्ताव लेकर आएंगे! श्रीकृष्ण प्रस्ताव लेकर के जाते हैं, प्रस्ताव रखते हैं, दुर्योधन की जो प्रतिक्रिया होती है उसका कृष्ण उत्तर देते हैं, दुर्योधन की कैद करने की धमकी का भी नीतिपूर्ण उत्तर देते हैं और दुर्योधन द्वारा भोजन के निमंत्रण का भी कि "मानव भोजन या तो प्रेम से करता है या मुसीबत में। प्रेम तुममें है नहीं और मुसीबत में मैं हूं नहीं, इसलिए तुम्हारे घर भोजन नहीं कर सकता।" श्रीकृष्ण ने महात्मा विदुर के घर जाकर भोजन किया था। हमारे आदर्श वे नीतिज्ञ श्रीकृष्ण है, जब दुर्योधन को पांडवों का राज्य देने को श्रीकृष्ण

कहते हैं और दुर्योधन कहता है: "काका पांडु तो जंगल में मुनि के श्राप से पत्नी के पास भी नहीं गए। अतः पाण्डव काका पांडु के पुत्र नहीं है। किसी पराए के पुत्र होने के नाते पांडव राज्य के अधिकारी कैसे हो सकते हैं?" तब श्रीकृष्ण ने तुरंत जवाब दिया था कि "विचित्रवीर्य स्वयं रोगी थे। तुम्हारे पिता धृतराष्ट्र स्वयं व्यास के नियोग द्वारा जनित पुत्र है। वे राज्य के अधिकारी कैसे हो सकते हैं?" हमारे आदर्श वे नीतिज्ञ श्रीकृष्ण है जिन्होंने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को विषाद से निकालकर उसे स्वधर्म में ही निधन को श्रेयस्कर बताते हुए युद्ध के लिए तत्पर किया था। भारत के एक प्रधानमंत्री ने अमेरिका में नीतियुक्त ऐसा ही कार्य किया था जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा था कि भारत राष्ट्र नहीं है तो प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति द्वारा आयोजित भोज का बहिष्कार किया था।

भारत के कृषि और किसान विकास राज्यमंत्री श्रीमान गजेंद्र सिंह जी शेखावत का आगमन डॉक्टर वेदपालजी के व्याख्यान के बीच कार्यक्रम में हुआ था। मंचस्थ विद्वानों के अभिवादन के बाद वह मंच पर विराजे। महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के कार्यकारी प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजय सिंह जी भाटी ने माननीय मंत्री जी का स्वागत किया और राजनीति में उनके द्वारा अर्जित सफलताओं को रेखांकित किया। माननीय मंत्री जी ने मंच से संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रऋषि महर्षि दयानंद भारत के जनसामान्य को भी तर्क ज्ञान से समृद्ध करने हेतु प्रयासरत रहे। मंत्री जी ने कहा कि आस्था दो प्रकार की होती है। एक श्रद्धाजनित एवं दूसरी तर्कजनित। जो लोग तर्क ज्ञान से रहित होते हैं, वे तर्कजनित सत्य को पहचानने में भी समर्थ नहीं होते और स्वीकारने में भी।

मंत्री जी ने विश्वास दिलाया ऐतिहासिक महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन को विश्व पर्यटन मानचित्र पर लाने एवं इसके ऐतिहासिक स्वरूप को बनाए रखते हुए जर्जर हो रहे इस भवन को सुढ़ करने हेतु कार्यवाही अवश्य करेंगे।

महाभारत के प्रकांड विद्वान आचार्य सत्यानंद जी वेदवागीश ने अपने व्याख्यान में बताया कि महाभारत युद्ध में ४७ लाख २३ हजार ६२० व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें से पांच पांडव, श्रीकृष्ण, अश्वत्थामा, सात्यकि, धृष्टद्युम्न का सारथी, युयुत्सु, कृतवर्मा और कृपाचार्य सहित सिर्फ १२ योद्धा जीवित बचे। ४७ लाख २३ हजार ६0८ योद्धा मारे गए। महाभारत के प्रमुख पात्रों में से १0 व्यक्तियों ने अपने कर्तव्य का पालन ठीक से किया होता

तो महाभारत नहीं होता। वास्तव में मूल्यों में कमी और बुराइयाँ महाभारत के १000 वर्ष पहले से शुरू हो गई थीं। किंतु जड़तावश लोग मानते नहीं थे। पांडवों के अज्ञातवास के समय पूर्व खुलने के झगड़े पर श्री भीष्म पितामह ने बताया कि अज्ञातबास के ५ माह २० दिन बाद पांडव सामने आए। किंतु कोई किसी की सुनता नहीं था। अतः महाभारत नहीं रुक पाया।

द्रोण स्थली आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की आचार्या अन्नपूर्णा जी ने कहा कि भारत के महापुरुषों के बारे में महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के दृष्टिकोण का प्रचार बहुत आवश्यक है। महर्षि दयानंद ने श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष को निष्कलंक और योगेश्वर घोषित किया। महर्षि ने महात्मा वेदव्यास को पुराणों जैसे अनार्ष और कुत्सित ग्रंथों के रचयिता होने के आरोप से मुक्त किया और कहा कि व्यास जी जैसा विद्वान ऋषि ऐसे अनार्ष ग्रन्थ बना ही नहीं सकता। और भी कई विषयों को महर्षि दयानंद ने पौराणिक पाप के परिक्षेत्र से बाहर निकाला। आचार्या जी ने श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के पीछे जाने और रास रचाने, उनके वस्त्र हरण के बारे में कहा कि गीता का आत्मज्ञान देने वाले योगेश्वर श्रीकृष्ण शरीर के पीछे नहीं भाग सकते। बाँसुरी वस्तुतः श्रीकृष्ण की बांध लेने वाली नीतिपूर्ण वाग्मिता थी, जिसमें वे विश्व को बांध लेते थे। श्रीकृष्ण पर जो मिथ्या आरोप है, यह सब प्रक्षिप्त है। श्रीकृष्ण निष्पक्ष थे– इस पर एक आख्यान उन्होंने सुनाया। जब पांडवों ने श्रीकृष्ण से पूछा कि आप कर्ण की दानवीरता के प्रशंसक क्यों है? श्रीकृष्ण ने कहा कि उन्हें जलाने के लिए कुछ चंदन की सूखी लकड़ी की आवश्यकता है। चारों और घनघोर वर्षा कई दिनों से हो रही थी। ऐसे में सूखी लकड़ी मिलने की संभावना नहीं थी। पांडवों ने हाथ खड़े कर दिए। तब श्रीकृष्ण कर्ण के पास जाकर के चंदन की सूखी लकड़ी मांगते हैं। कर्ण कुछ क्षण सोच में पड़ता है फिर कहता है– मेरे पलंग चंदन की लकड़ी के बने हैं। आपको जितनी लकड़ी चाहिए मेरे पलंग तोड़ के मैं दे देता हूँ। तब श्रीकृष्ण ने पांडवों को कहा कि चंदन की लकड़ी का उपयोग तो तुम्हारे यहां भी हुआ है, किंतु यह कर्ण की दानवीरता ही है जो कोई परवाह नहीं करती।

शारदीय नवसस्येष्टि एवं महर्षि दयानंद सरस्वती बलिदान दिवस

नगर आर्यसमाज गुलाबसागर

कार्तिक अमावस्या संवत २०७४ विक्रमी गुरुवार १६ अक्टूबर २०१७ को शारदीय नवसस्येष्टि एवं महर्षि दयानंद सरस्वती बलिदान दिवस पर नगर आर्यसमाज गुलाब सागर जोधपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में नवान्न मिश्रित सामग्री से पर्व की विशेष आहुतियाँ दी गयीं। विशेष यज्ञोपरान्त माता शान्तिदेवीजी ने ऋषि महिमा का गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्यजनों को संबोधित करते हुए आर्यसमाज जालोरियाँ का बास के मंत्री श्री श्याम आर्य ने समाज की विकट और असहनीय परिस्थितियों की ओर सबका ध्यान आकर्षित कर कहा कि आर्यजन इसे सहन नही कर सकते और समाज में फैल रहे अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरूद्ध संघर्ष को तेज करना होगा। शान्तिपाठ व जयकारों से समापन के पूर्व कमलकिशोर आर्य ने महर्षि के बलिदान के कारणों को रेखांकित करते हुए शारदीय नवसस्येष्टि के दीपावली और अब धमाका और धुँआ पर्व में बदलने का वर्णन करते हुए वर्तमान स्थिति को भी विकट बताते हुए सबसे सक्रिय होने का आह्वान किया और स्वामी सत्यप्रकाश जी के शब्दों में सेवा, साधना और स्वाध्याय रूपी आर्यसमाज की आत्मा को जगाकर अपने भीतर धारण करने का आह्वान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में

शारदीय नवसस्येष्टि एवं महर्षि दयानंध सरस्वती बलिदान दिवस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में आयोजित कार्यक्रम में डॉ0 रामनारायण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ में पर्व की विशेष आहुतियाँ दी गयीं। श्री प्रवीण आर्य ने महर्षि महिमा का गीत "दयानन्द दीप जलाने आया" गाया। श्री विक्रम सिंह आर्य ने "आर्यों के तुम हो प्राण ऋषि दयानन्द तुम्हारा क्या कहना" तथा "हमको अमृत पिलाकर खुद जहर पी गया, ऋषि तूने कमाल कर दिया... अमर हो गया" प्रस्तुत किए। श्री कपिलदेव आर्य ने शारदीय नव सस्येष्टि एवं महर्षि दयानंद बलिदान दिवस की ऐतिहासिकता बताते हुए आर्यसमाज के कार्य को गति देने की आवश्यकता भी बताई। इसके लिए संभावित प्रयास को रेखांकित करते हुए विशेषकर शैक्षिक क्षेत्र में महर्षि को स्थापित करने के लिए शिक्षा जगत से संवाद को आवश्यक बताया, जिसके लिए न्यास गोष्ठियाँ और संवाद आयोजित कर सकता है। कमल किशोर आर्य ने इस अवसर पर विदेशी मतों के अनुयायियों की देखादेखी अपनी संस्कृति को विकृत करने की ऋषि संतानों की प्रवृत्ति पर चिंता जताई। उदाहरण देते हुए कहा कि आज हमारी युवा पीढ़ी दीपावली पर पठाके फोड़ने पर पर्यावरण की चिंता को क्रिसमस और नववर्ष तथा अन्य पर्वों, उत्सवों और अवसरों पर ईसाइयों आदि द्वारा की जाने वाली आतिशबाजी से जोड़ती है। कल यही मानसिकता बंद होती जा रही बलिप्रथा को बकरीद से जोड़कर पुनः प्रचलित करेगी। इस मानसिकता का इलाज आर्ष शिक्षा पद्धति बताते हुए संतानों को आर्यसमाज, आर्यवीर दल और देव दयानन्द से जोड़ने का आह्वान किया।

नोटः– कृपया चित्र कवर पृष्ठ 3 पर देखें।

दिपावली के उपलक्ष्य पर स्मृति भवन न्यास में एकत्रित आर्यजन

दिपावली के उपलक्ष्य पर श्री कमलकिशोर आर्य प्रवचन देते हुए

न.आ. समाज से
श्री श्याम आर्य

न.आ. समाज से
माता शांति आर्या

न.आ. समाज में दिपावली यज्ञ करते आर्यजन

Postal Reg. Jodhpur/434/2015-17
जोधपुर आर एम एस द्वारा वितरण

Date of Print 5-11-2017
Date of Posting 9,10-11-2017

साऊथ अफ्रीका से पधारे अतिथियों का स्वागत

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास में कार्तिक शुक्लपक्ष पंचमी संवत् २०७४ बुधवार दिनांक २५ अक्टूबर २०१७ को दक्षिण अफ्रीका से पधारे वयोवृद्ध आर्य नेता श्री दयानंद जी का सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री कपिलदेव जी के संचालन में सुन्दर यज्ञ किया गया, दो सुन्दर भजन श्रीमती चन्द्राजी जसमतिया व शान्ति देवी जी ने सुनाये। उसके बाद श्री कपिलजी द्वारा ब्रह्मयज्ञ करा कर सुन्दर प्रवचन दिया कि ऋषि दयानन्द जी का हमारे उपर कितना उपकार है कि आज हम मिल कर उस निराकार प्रभु को याद करते हैं।

पश्चात श्रीमान दयानंद जी एवं उनके साथ पधारे श्री अमराराम जी एवं स्वजनों का माल्यार्पण, साफा बंधवाकर, गायत्री मंत्र पट्टिका धारण करवा एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर अभिनंदन किया गया। श्रीमती दयानंद जी का भी शाल ओढ़ाकर एवं गायत्री मंत्र पट्टिका द्वारा अभिनंदन किया गया। मंत्री जी आर्य किशनलाल जी गहलोत द्वारा अतिथि वृंद का परिचय दिया गया। पश्चात स्वागत सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमान दयानंद जी ने अभिनंदन के लिए आभार व्यक्त किया। साथ ही बहुत ही सुबोध और सरल भाषा में वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। एक उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि किसी एक नाम के एक व्यक्ति से आपने यहॉ कुछ रकम उधार ली। कहीं सैकड़ों किलोमीटर दूर, बहुत दूर किसी अन्य प्रदेश में आप एक अनजान पुरुष को उधार दाता व्यक्ति के नाम से संबोधित करके वह राशि दे देते हैं, तो गलत हुआ और पाप हुआ। क्योंकि आपने असल उधार दाता को राशि नहीं लौटाई, गलत व्यक्ति को लौटाई। ठीक इसी प्रकार हम पर असीम उपकार करने वाले परमदयालु परमदाता परमेश्वर के उपकार के बदले यदि हम श्रद्धा का समर्पण परमात्मा को ना कर परमात्मा के नाम से किसी अन्य– जो वस्तुतः परमात्मा नहीं है– को करते हैं तो कितना बड़ा घोर पाप है। न्यास के कार्यकर्ता प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विजयसिंह जी भाटी ने अतिथिवृंद एवं उपस्थित आर्यजनों का आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित किया। अन्त मे कपिल शास्त्री द्वारा शान्ति पाठ कराया। कार्यक्रम संचालन श्री यशपाल जी आर्य ने किया।

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्व... , महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलि... (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर... ला केरू हाऊस जोधपुर
फोन 982939...
सम्पादक मोबाइल नं. 9460649055

030
सम्मानित
श्री प्रधान जी, सार्वदेशिक आर्य्य
प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमानरोड़,
करोलबाग, दिल्ली 110025